ॐ श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका
संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाश संदेश

वर्ष 25 | 15 फरवरी 2006 | अंक 4

वार्षिक शुल्क :- रू. 50 (भारतवर्ष में), रू 500 (विदेश में)



श्रद्धा विश्वास से होगा प्रभु दर्शन सद्गुरु टेऊँराम अमृतवाणी

भक्त प्रह्लाद जी को हिरण्यकशिपु के द्वारा नाना प्रकार की कठोर यातनाएँ इसलिए दी जा रही थीं कि वह राम—नाम का स्मरण जाप छोड़कर दैत्यराज हिरण्यकशिपु का ही स्मरण आदि करे, परन्तु कठोर से कठोर कष्टों के दिये जाने पर भी राम—नाम के प्रताप से भक्त—प्रह्लाद का बाल भी बांका नहीं हो पाया, यहाँ तक कि होलिका द्वारा जलाये जाने पर भी भक्त पर आँच तक न आ पायी और स्वयं होलिका ही जलकर राख हो गई। राम के नाम के अमित प्रभाव को देखकर राक्षस राज का मनोबल तो गिर ही चुका था फिर भी हठ को पकड़ने के लिये भक्त प्रह्लाद को आदेश दिया, ज्योंही प्रह्लाद ने खम्भे को पकड़ा त्योंही वह तपा हुआ खम्भा हिम से भी अधिक शीतल हो गया। गोस्वामी तुलसीदास जी का कथन है कि— चौपाई—गरल सुधा रिपु करहिं मिताई, गोपद सिंधु अनल सितलाई।

राम नाम के प्रभाव से ज़हर अमृत बन जाता है, शत्रु लोग सज्जन बन जाते हैं, अगाध सागर गोपद के समान छोटा—सा बन जाता है और धधकती हुई आग शीतल बन जाती है।

तपे हुए खम्भे को पकड़ने पर भी जब प्रह्लाद को कुछ न हुआ तब महा दैत्य ने अपनी तीखी तलवार का प्रहार प्रह्लाद पर करना चाहा तो एकदम खम्भे से एक भयंकर शब्द निकला और खम्भा फट पड़ा और उसमें से एक विलक्षण रूप धारण कर भगवान नृसिंह जी प्रकट हो गये। उस अद्भुत रूप को देखकर असुर राज हिरण्यकशिपु अवाक् रह गया। इतने में भगवान नृसिंह ने झट से महा दैत्य को पकड़ कर उसके समस्त प्राप्त वरदानों को पूरा करते हुए अपने तीक्ष्ण नखों द्वारा उसका पेट फाड़ कर भक्त प्रह्लाद की रक्षा की।

इतनी कथा सुनाकर गुरु महाराज जी करने लगे कि जिस प्रकार से भक्त प्रह्लाद की श्रद्धा और विश्वास द्वारा लोहे के खम्भे में से प्रकट होकर भगवान नृसिंह जी ने दैत्यराज को मार कर भक्त प्रह्लाद की जय की थी, ठीक उसी प्रकार जब इस जीव का भी सद्गुरु, सन्तों और शास्त्रों में विश्वास होगा तब ही उस विश्वास रूपी खम्भे में से आत्मा नृसिंह के रूप में प्रकट होकर मन रूपी हिरण्यकशिपु को मार कर साक्षात् दर्शन देकर त्रिविध तापों को दूर कर जीव को मुक्त बना कर उसकी तीनों लोकों में जयकार करेगा। इसलिये प्राणी मात्र का परम कर्तव्य यही है कि वह सन्त—महात्मा व शास्त्र में विश्वास रखकर अपना उद्धार करे।

नमः टेऊँरामाय ॐ श्री सत्नाम साक्षी नमः सर्वानन्दाय

जयपुर में

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का 85वाँ चैत्र मेला

11 से 15 अप्रैल 2006 तक

देखो प्रेमी आयके, अमरापुर स्थान ।
सन्त समागम पायके, अपना करो कल्यान ।।

कलियुग में प्रधान है, सेवा पुनि सत्संग ।
कह टेऊँ जिसके किए, होवे भव दुःख भंग ।।

समस्त सज्जनों को सूचित करते हुए हर्ष होता है कि सनातन धर्मी श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य योगीराज ब्रह्मश्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ श्री 1008 आचार्य सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज द्वारा स्थापित चैत्र मेला श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष **सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज** की अध्यक्षता में सिन्धी तारीख 12 से 16 चैत्र सम्वत् 2063 तदनुसार **मंगलवार 11 अप्रैल से शनिवार 15 अप्रैल 2006** तक भव्य हर्षोल्लास से मनाया जा रहा है. इस महाब्रह्मयज्ञ में प्रेम प्रकाश मण्डल के सब सन्त एवं सारे भारत वर्ष के सन्त महात्मा, विद्वान, कवि, भगत सद्गुरु महाराज के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालेंगे. आप सबसे नम्र निवेदन है कि इस महोत्सव में सपरिवार आकर अपने मानव जीवन को कृतार्थ करें.

卐 कार्यक्रम 卐

सोमवार 10 अप्रैल, 2006	स्वामी गुरुमुखदासजी महाराज की 41वीं पुण्यतिथि
मंगलवार 11 अप्रैल 2006	प्रातः 6 से 8 बजे तक सत्संग, 8 से 10 बजे तक हवन एवं ध्वजावंदन सायं 3 बजे शोभायात्रा, 8 से 9 बजे तक सत्संग
बुधवार 12 अप्रैल से शुक्रवार 14 अप्रैल, 2006	प्रातः 6 से 11 बजे तक एवं सायं 3 से 9 बजे तक सत्संग
शनिवार 15 अप्रैल, 2006	प्रातः 4 बजे सत्संग शुरू होगा एवं प्रातः 7 बजे पल्लव पाकर उत्सव का समापन

शोभायात्रा का मार्ग

श्री अमरापुर स्थान से पोलोविक्ट्री, पुलिस लाइन, चांदपोल बाजार, छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़, जौहरी बाजार, सांगानेरी गेट, न्यू गेट, नेहरू बाजार, इन्दिरा बाजार, पांच बत्ती, एम.आई.रोड से पुनः अमरापुर स्थान पर समापन.

नोट
१. सभी यात्री आवश्यकतानुसार बिस्तर, ताला, टार्च, गिलास जरूर लावें.
२. सोना गहना व कीमती सामान साथ न लावें.
३. कोई भी माता-बहिन अपने पिता, भाई या पुरुष रिश्तेदार इत्यादि के सिवा अकेली न आवें.

सेवा में
प्रेम प्रकाश मण्डल (ट्रस्ट)
अमरापुर स्थान, जयपुर-302001
फोन : 0141-2372423, 24 फैक्स : 2362424
e-mail : amrapur@premprakashpanth.com

पता
सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज
श्री अमरापुर स्थान,
एम. आई. रोड, जयपुर-302001
website : www.premprakashpanth.com

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

हिन्दी भाषा में आध्यात्मिक जगत की श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की अधिकृत मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

15 फरवरी 2006

वर्ष 25 अंक 4

मंगल आशीष

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक

सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण–मार्गदर्शन

सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए–	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए–	140 रू.	1400 रू.

मूल्य एक प्रति 5 रूपए

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :-
व्यवस्थापक : प्रेम प्रकाश संदेश,प्रेम प्रकाश आश्रम,
गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर –474001
फोन: 0751– 5045144 सांय 4 से 8 बजे तक,
शेष समय 2454183 फैक्स:0751.5045144
e-mail-editorpremprakashsandeshgwl@yahoo.com

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः ८ से १२ बजे तक व प्रति शनिवार सांय ५ से ८ बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउंटर पर श्री कुमार चंदनानी व श्री नारायणदास रामचंदानी जी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.

शिव नाम का माहात्मय

पातकानि विनश्यन्ति यावन्ति शिवनामतः। भुवि तावन्ति पापानि क्रियन्ते न नरैर्मुने।।
शिवनामतरीं प्राप्य संसाराब्धिं तरन्ति ते। संसारमूलपापानि तानि नश्यन्त्यसंशयम्।।
संसारमूलभूतानां पातकानां महामुने। शिवनामकुठारेण विनाशो जायते ध्रुवम्।।
शिवनामामृतं पेयं पापदावनलार्दितैः। पापदावाग्नितप्तानां शान्तिस्तेन विना न हि।।
शिवेति नामपीयूषवर्षाधारापरिप्लुताः। संसारदवमध्येऽपि न शोचन्ति कदाचन।।
शिवनाम्नि महद्भक्तिर्जाता येषां महात्मनाम्। तद्विधानां तु सहसा मुक्तिर्भवति सर्वथा।।
(शिवपुराण वि0 23/27, 29–33)

भगवान् शिवके नामसे जितने पाप नष्ट होते हैं, उतने पाप मनुष्य इस भूतलपर कर नहीं सकते। जो शिवनामरूपी नौका पर आरूढ़ हो संसाररूपी समुद्रको पार करते हैं, उनके जन्म–मरणरूप संसारके मूलभूत वे सारे पाप निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। महामुने! संसार के मूलभूत पातकरूपी पादपोंका शिवनामरूपी कुठारसे निश्चय ही नाश हो जाता है। जो पापरूपी दावानलसे पीड़ित हैं, उन्हें शिव– नामरूपी अमृतका पान करना चाहिये। पापोंके दावानलसे दग्ध होनेवाले लोगोंको शिव–नामामृतके बिना शान्ति नहीं मिल सकती। जो शिवनामरूपी सुधाकी वृष्टिजनित धारामें गोते लगा रहे हैं, वे संसाररूपी दावानलके बीचमें खड़े होनेपर भी कदापि शोकके भागी नहीं होते। जिन महात्माओंके मनेमें शिवनामके प्रति बढ़ी भारी भक्ति है, ऐसे लोगों की सहसा और सर्वथा मुक्ति होती है।

अनुक्रम

भाग-5 सद्गुरु टेऊँराम दोहावली

39. दोहा: *तन के गुरु बहुत मिलत है, कह टेऊँ जग माहिं।*
दुर्लभ है मन का गुरु, मिलत भाग बिन नाहिं।।

भावार्थः सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं कि इस संसार में स्वरूप और शरीर के गुरु तो बहुत है किन्तु मन का गुरु तो भाग्यशाली को ही मिलता है। पुण्य के बिना मन का सच्चा गुरु नहीं मिलता है।

40. दोहा: *गुरु की सेवा जो करे, गुरु की आज्ञा मान।*
कह टेऊँ गुरु नाम रट, गुरुमुख सो पहचान।।

भावार्थः सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज कहते हैं अपने गुरु की आज्ञा को मन से स्वीकार करके उनकी खूब सेवा करनी चाहिये। गुरुजी के द्वारा दिये गये मंत्र का नाम स्मरण करना चाहिये। उसी व्यक्ति को गुरुमुख पहिचानना चाहिये।

41. दोहा: *राज न चाहे इन्द्र का, ना वैकुण्ठ की आस।*
गुरु चरनों में लीन हो, गुरुमुख कहिये तास।।

भावार्थः जो शिष्य न तो इन्द्र का राज्य चाहता हो और न ही वैकुण्ठ की आशा रखता हो। वह तो केवल गुरु चरणों में लीन रहता हो उसी को गुरुमुख जानना चाहिये। गुरु के अतिरिक्त अन्य सब ओर से मन को हटा देना ही सच्चे शिष्य का लक्षण है।

42. दोहा: *सत्गुरु के नित पास रह, गुरु से राखे हेत।*
कह टेऊँ गुरुमुख वही, ब्रह्मानन्द सुख लेत।।

भावार्थः जो अपने सद्गुरु के सदैव पास रहते हैं तथा उन्हीं से हेत रखते हैं स्नेह रखते हैं वे गुरुमुख शिष्य ही ब्रह्मानन्द का सुख प्राप्त कर सकते हैं। गुरु की तन्मयता के साथ सेवा करने से ही ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है।

43. दोहा: *सुख दुःख में त्यागे नहीं, सत्गुरु का जो संग।*
कह टेऊँ तिस दास को, लगे राम का रंग।।

भावार्थः जो शिष्य सुख–दुःख में अपने गुरु की संगति का त्याग नहीं करता है अर्थात् सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि कितना ही दुःख क्यों न आ जावे, जो गुरु से विमुख नहीं होता ऐसे दास को ही राम का रंग लगता है। सुख–दुःख की स्थिति का त्याग करने पर ही राम में मन लगता है।

44. दोहा: *मैं मेरा गुरु चरन में, जो जन भेंट चढ़ाय।*
कह टेऊँ तिस दास के, काल निकट नहिं आय।।

भावार्थः जो शिष्य अपने **अहंकार** और **यह मेरा है** इन दोनों को गुरुजी के चरणों में अर्पित कर देता है उस दासको काल का भय नहीं रहता। सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि काल उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता है। हमें **अपनेपन और ममत्व** का त्याग कर देना चाहिये।

45. दोहा: *सत्गुरु बादल बरसिया, अपनी कृपा धार।*
कह टेऊँ हर ताप को, दीना सूख अपार।।

भावार्थः सत्गुरु रूपी बादल से कृपा रूपी जलधारा बरस रही है। सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि यह कृपा की जल धारा समस्त संताप को हर लेती है और अपार सुख देने वाली है। गुरु की कृपा सदैव सुखदायिनी होती है।

46. दोहा: *टेऊँ सोऽम् जाप जप, गाफिल कबहुं न होय।*
इक इक श्वास अमोल है, तांहि न वृथा खोय।।

भावार्थः सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि **मैं उसी परमात्मा का अंश हूं** इस मंत्र का सदैव जप करते रहने से, हे मनुष्य! तू कभी भी ग्लानि से दुःखी नहीं होगा। इस जीवन का एक एक श्वास अनमोल है। इसे व्यर्थ में नहीं गंवाना चाहिये। उस ब्रह्म का चिन्तन करना चाहिये।

47. दोहा: *कह टेऊँ नित कीजिये, राम नाम से प्रेम।*
इक इक श्वास अमोल है, तांहि न वृथा खोय।।

भावार्थः सद्गुरु टेऊँरामजी महाराज कहते हैं कि नित्य निरन्तर श्रीराम नाम से प्रेम कीजिये क्योंकि राम नाम के तुल्य न तो कोई जप–तप है और न ही कोई संयम, नियम और अन्य तप साधना है। राम नाम जपने मात्र से सब प्रकार का तप हो जाता है।

48. दोहा: *राम जपन में जीभ पुन, कर पद दूखे नाहिं।*
टेऊँ दाम न लगत कछु, क्यों नहिं जपते ताहिं।।

भावार्थः सद्गुरु टेऊँरामजी कहते हैं कि राम का नाम जपने से न तो जीभ दुखती है और न ही हाथ–पैर दुखते हैं। श्री राम का नाम लेने में किसी प्रकार का खर्च भी नहीं लगता है फिर भी राम नाम क्यों नहीं जपते। अतः हमें भगवान का नाम जपते रहना चाहिये।

बाबा टेऊँराम का पावन जन्म दिवस शनिवार



शनिवार की महिमा न्यारी,
जग में आप पधारे।
तेरी तपस्या के बल से हुए,
शनि के वारे न्यारे।।
जो भी शनिवार को आवे,
गुरु चरणों में शीश झुकावे।
उसकी मंशा पूरी,
करते बाबा टेऊँराम।।

शनि ग्रह का नाम सुनते ही भयभीत हो जाते हैं हम सब! शनि को अशुभ व दुःखदर्द देने वाला ग्रह मानते हैं। इसके प्रभाव से दुःख की घड़ी शनै–शनै बीतती है(शनैचर अर्थात् धीरे–धीरे चलने वाला)। मन विचलित हो उठता है। ग्रह–क्लेश, दुःखदर्द, विवाह, धन–पदार्थों आदि की दशा भी ठीक नहीं रहती। इस ग्रह की छाया भी किसीको न लगे, ऐसी हम सब कामना करते हैं। ऐसे ग्रहगोचर की दशा दूर करने के लिये भगवान योगेश्वर ने महायोगी सद्गुरु टेऊँरामजी महाराजके रूप में शनिवार के दिन इस पवित्र धरा पर अवतार लिया। जिससे शनिग्रह का भय किसीको न लगे। जो कोई भक्त शनिवार के दिन बाबा टेऊँराम के दरबार का दर्शन सच्चे मनसे करता है। बाबा उसके सब दुःखदर्द दूर कर देते हैं। वह सदैव प्रसन्नचित्त होकर परम सुख को प्राप्त करता है। मनमें सच्चा प्रेम–भाव रख कर हर शनिवार को बाबा टेऊँराम की दरबार पर दीप जलाना, ढ़ोढा चटनी महाप्रसाद का भोग लगाना, सतनाम साक्षी महामंत्र का जाप करना, सांई टेऊँराम चालीसा पाठ करना व बाबा के दिव्य स्वरूप का पावन दर्शन! ये सभी शुभ कार्य करनेसे मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है। सच्चे मन से जो ऐसी भावना लेकर बाबा टेऊँराम के दरबार पर जाता है बाबा उसकी हर मनोकामना पूरी कर देते हैं।

अची छन्छर ड्रींहु सीस झुकाए, सभु मन जूं मुरादूं सो पाए।
तहिजा कारज थियनि, गुरू सभु कुछ डियनि वरे वारो।।
अचो प्रेमी हली, कंदो सतगुरू भली डिब वारो।
आयो आयो आ छन्छर डि्हाड़ो।।

मनोइच्छित फल प्राप्ति हेतु आज शनिवार के पवित्र दिन हजारों लाखों श्रद्धालु बाबा टेऊँराम के मुख्य दरबार श्री अमरापुर धाम सहित देश विदेश के सैकड़ों प्रेम प्रकाश आश्रमों पर हाजरी जरूर लगाते हैं। भोरवेला से रात्रिपर्यन्त श्रद्धालु भक्तों का तांता लगा रहता है सभी दरबारो में। एक मेले जैसा माहौल! अद्भुत नजारे! कोई धूप–दीप, अगरबत्ती लगा रहा है तो कोई समाधि स्थल मंदिर में नामजप कर रहा है, तो कई भक्त सतनाम साक्षी मंत्रमाला का पवित्र जाप तो कोई बाबा का चालीसा पाठ करके बाबा को सश्रद्धा मना रहा है। दरबारों में बाबा की पवित्र महिमा का गुणगान भजनों के माध्यम से चल ही रहा है। चहुं ओर भक्तिमय वातावरण! भक्ति सरोवर में डूबे भक्तजन भूल जाते हैं अपनी सुध–बुध! सभी का मन **'सांई टेऊँराम आराधना'** में दिखायी पड़ता है।

ऐसे ग्रहगोचर, दुःखदर्द को दूर करने वाले हैं अवतार कोटि के महापुरुष बाबा टेऊँरामजी महाराज! ऐसे महायोगियों के अवतार लेने पर दिवस, महीना, तिथि, वर्ष, स्थान, देश, गाँव एवं वह भूमिभी पावन हो जाती है साथ ही ये सभी पूजनीय बन जाते हैं। आज पूरे विश्व में बाबा टेऊँराम का जन्मोत्सव वर्ष में अनेको बार मनाया जाता है। वार्षिक जन्मोत्सवमें सांई टेऊँराम जयन्ती, मासिक जन्मदिवस में सांई टेऊँराम चौथ और साप्ताहिक जन्म दिवस में हर शनिवार बाबा टेऊँराम का अवतरण दिवस पूर्ण श्रद्धा भक्ति–भाव के साथ उल्लासपूर्वक मनाया जाता है।

शनिवार की पवित्रवेला में समूचे विश्व में प्रातःकालीन व सायंकालीन सांई टेऊँराम भक्ति संध्या, गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ, सांई टेऊँराम महिमा गुणगान, सांई टेऊँराम चालीसा पाठ, सतनाम साक्षी महामंत्र माला का जाप, सांई टेऊँराम जन्मसाखी का पाठ, आरती एवं बाबा के मंदिर की मनमोहक सजावट कर पुष्पों से शृङ्गारित किया जाता है। साथ ही महाप्रसाद ढ़ोढा चटनी का भोग लगाकर **'सांई टेऊँराम अवतरण दिवस शनिवार'** को बड़े श्रद्धा प्रेम के साथ उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

ड्रींहु छन्छर आयो आ,
जन्म स्वामी टेऊँराम जो, मिली शिष्यनि मल्हायो आ।।
1. थियो भागु भलो सभजो, जेके ड्रींहु मल्हाइनि था।
आहे वारो वरियो तिन जो।।
2. मिली महिमा गाइनि था, कृपा स्वामी टेऊँराम जी।
पहिंजो घरड़ो वसाइनि था।।
3. भला छन्छर सदोरो आ, करे आश थिए पूरी।
झुलियो घर में हिन्दोरो आ।।
4. चवे 'जीवनमुक्त' जाई, खाली कोन वियो दर तां।
मिली सभखे आ वाधाई।।

भजन

थलुः छन्छर दिहाड़ो आयो, घर घर वरी वाधाई।
जगमग जगाये जोतीं, घर घर खुशी मनाई।।
1. धन धन खण्डूअ जी नगरी, धन धन आ सिन्धुरी सारी।
धन धन पिता ऐं माता, जिन कई आहे कमाई।।
2. जग खां करे किनारो, झंगलु वञी वसायो।
तन मन तपाए पहिंजो, निंडड़ी मिठी फिटाई।।
3. घर जा सामान विकिणी, चालू कयो भण्डारो।
अणखुट हले अव्हांजो, सभको वञे प्यो खाई।।
4. दुनियां जदहिं सतायो, पाड़ौं पटण थे चाहियो।
सभ में दिसी सो साखी, दिल कहिंजी ना दुखाई।।
5. परमानन्द आहे गोलो, मेटियो भरम ऐं भोलो।
मिलियो आ मानुष चोलो, तहिंखे सफल बणाई।।

बाबा टेऊँराम की अद्‌भुत शक्तियां-३

सर्व शक्ति के आधार बाबा टेऊँराम

सर्वगुण सम्पन्न! भक्ति-शक्ति के आधार! सच्चिदानन्द स्वरूप! निर्गुण निराकार! ब्रह्मवत्! सिन्ध प्रदेश के युगपुरुष महायोगी भगवद स्वरूप सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज! जिनकी यश कीर्ति सूर्य के सम चहुं ओर प्रकाशित है। ऐसे परम योगीश्वर की महिमा सूर्य को दीप दिखाना!

महाराजश्री एक समय सिन्ध से हिन्द देश के तीर्थक्षेत्र में यात्रा पर निकले। कुछ संत व भक्तगण उनके साथ थे। पूरे हिमालय, उत्तराखण्ड, चारों धाम, उत्तरकाशी आदि सभी यात्राओं पर पैदल जा रहे थे। सर्वशक्ति के आधार बाबा टेऊँराम जी मण्डली सहित निर्भयता के साथ एवं भूख-प्यास-सर्दी-गर्मी को सहन कर तीर्थाटन कर रहे थे। तभी किसी भक्त को भोजन व दूध की इच्छा हुई। संतों अन्य भक्तों ने उसे समझाया! यहां झंगल में दूध व भोजन कहां से मिलेगा! इस घोर झंगल में तो अन्य व्यक्ति तो क्या पर पशु-पक्षी तक नजर नहीं आ रहे! बाबा अपनी मस्ती में मस्त! प्रभु-भक्ति में लीन! बाबा भोले सदृश भस्म रमाये! ब्रह्मचिन्तन में स्थित!

सर्वशक्ति के आधार बाबा ने सुन ली भक्त की पुकार! भूख-प्याससे व्याकुल बाबा से मन ही मन पुकार कर रहा था भक्त!

बाबा ने दो मिनट किया ध्यान! बस! अद्‌भुत करिश्मा! एक सज्जन आया- भोजन व दूध की गागर भरकर रख गया। यह आश्चर्यजनक अद्‌भुत शक्ति देखकर सभी संत व भक्त चकित हो गये। तो ऐसे हैं सर्व शक्ति के भण्डार बाबा सांई टेऊँरामजी महाराज! (यह प्रसङ्ग ऋषिकेश के बंगाली संत द्वारा प्रत्यक्ष देखा गया, जो उन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डल के संतों को बताया।)

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर
दैनिक समय सारणी

मंदिर खुलने का समय

सुबह : ६:०० बजे से १२:०० बजे तक
सायं : ३:०० बजे से ६:०० बजे तक

सत्संग का समय

सुबह : ७:०० बजे से ८:२० बजे तक
सायं : ४:३० बजे से ६:०० बजे तक

आरती सायं 6:00 से 6:20 बजे तक

रविवार सत्संग

सुबह : ७:०० बजे से ९:३० बजे तक
(सत्संग-अमृत प्रवचन कैसेट)
सांय : ४:३० बजे से ६:०० बजे तक
(सत्संग-भजन-आरती)

गुरुवार व शनिवार

सुबह : ७:०० बजे से ८:३० बजे तक
(सत्संग-गुरु प्रार्थनाष्टक पाठ)
सांय : ४:३० बजे से ६:३० बजे तक
(भजन-आरती-सत्‌नाम साक्षी मंत्र जाप-समाधि स्थल पर पुष्पों का श्रृगांर)

झांकी दर्शन

सायं : ५:०० बजे से ६:३० बजे तक
(गुरुवार व शनिवार)

श्री मन्दिर व मुख्य द्वार दोपहर 12 से 3 व रात्रि 9:30 से प्रातः 6 तक बन्द रहेगा

प्रेम प्रकाश संदेश का रजत जयंती अङ्क

८५ वाँ चैत्र मेला आपके प्रिय प्रेम प्रकाश संदेश का रजत जयंती वर्ष भी होगा। आपकी अपेक्षाओं की कसौटी पर कितना खरा उतरे हैं हम! इन पच्चीस वर्षों के सफर का विवरण देने का प्रयास करेंगे हम आपके अमूल्य सहयोग से। तो उठायें अपनी लेखनी और प्रेम प्रकाश संदेश के बारे में अपने विचार लिख कर हमें १५ मार्च तक पोस्ट द्वारा भेजें। व्यवस्थापक



महामृत्युञ्जय— जप— प्रकार एवं विधि

शरीरं व्याधिमंदिरम्— इस पाञ्चभौतिक शरीरमें नाना कारकी आधि—व्याधियां होती रहती हैं। शरीरको स्वस्थ खनेके लिये युक्त आहार—विहार, खान—पान नियमित ़नचर्या आदि बहुत से उपाय बतलाये गये हैं। इन सब पायोंको करते रहनेके बाद भी कर्म—भोगके कारण शरीरमें ोई बलवान अरिष्ट जब चिकित्सा, आदि उपायोंसे ठीक नहीं । पाता है, तब ऐसे अरिष्ट की निवृत्तिके लिये या शान्तिके ऱये शास्त्रोंमें महामृत्युञ्जयके जप का विधान बतलाया गया है। स जपसे मृत्युको जीतने वाले महारुद्र देवता प्रसन्न होते हैं और रोगसे पीड़ित व्यक्तिको शान्ति प्रदान करते हैं।

मृत्युञ्जय— जप का मूल मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

र्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। (शुक्लयजु॰ ३/६०)

र्थात् हम त्रिनेत्रधारी भगवान् शंकरकी पूजा करते हैं, जो र्त्यधर्मसे (मरणशील मानवधर्म—मृत्युसे) रहित दिव्य सुगन्धिसे क्त, उपासकोंके लिये धन—धान्य आदि पुष्टिको बढ़ानेवाले हैं। त्रिनेत्रधारी उर्वारुक (कर्कटी या ककड़ी— जो पकनेपर वृन्त या न्धन —स्थानसे स्वतः अलग हो जाती है) फलकी तरह हम बको अपमृत्यु या सांसारिक मृत्युसे मुक्त करें। स्वर्गरूप या क्तिरूप अमृतसे हमको न छुड़ावें। अर्थात् अमृत—तत्त्वसे हम ासकोंको वंचित न करें।

पर्युक्त मूल मंत्रमें भूः भुवः स्वः— इन तीन व्याहृतियोंमें तथा ॐ) हौं जूं सः — इन तीन बीजमंत्रोमें ॐ इस प्रणवको लगा र मृत्युञ्जय—मंत्रके तीन प्रकार बतलाये गये हैं—

. ४८ वर्णात्मक पहला मंत्र आठ प्रणवयुक्त। (मृत्युञ्जय—मंत्र)

. ५२ वर्णात्मक दूसरा छः प्रणववाला। (मृतसंजीवनी मृत्युञ्जय—मंत्र)

. ६२ वर्णात्मक तीसरा चौदह प्रणववाला। (महामृत्युञ्जय—मंत्र)

पहला मृत्युञ्जय— जप— मंत्र

ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे...मामृतात्। ॐ ः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ।

दूसरा मृतसंजीवनी— मंत्र

हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे..... मृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ सः जूं हौं ॐ।

तीसरा महामृत्युञ्जय— मंत्र

ॐ हौं ॐ जूं ॐ सः ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ त्र्यम्बकं यजामहे.....मामृतात्। ॐ स्वः ॐ भुवः ॐ भूः ॐ सः ॐ जूं ॐ हौं ॐ।

उपर्युक्त मृत्युञ्जयके मंत्रमें मृत्युञ्जय—मंत्र, मृतसंजीवनी मृत्युञ्जय मंत्र तथा महामृत्युञ्जय—मंत्र—इन तीनों प्रकारोंमें प्रायः द्वितीय मृतसंजीवनी मृत्युञ्जय—मंत्र अधिक प्रचलित है।

सूर्यादि नवग्रहोंकी दशा, महादशा, अर्न्तदशा तथा प्रत्यन्तर्दशा यदि किसी व्यक्तिके लिये अरिष्ट उत्पन्न करने वाली होती है। तो उन—उन अरिष्टकारक ग्रहोंकी शान्तिके लिये 'मृत्युञ्जय' देवता की शरणमें जाना ही पड़ता है। मृत्युञ्जय देवताकी प्रार्थनामें यह स्पष्ट है कि शरणमें आये पीड़ित व्यक्तिको वे जन्म, मृत्यु, जरा (वृद्धावस्था), रोग एवं कर्मके बन्धनों से मुक्त कर देते हैं। इसी आशय (भाव)— से निम्नाङ्कित प्रार्थना है—

मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीड़ितं कर्मबन्धनैः।।

मृत्युञ्जय— जप की विधि

सर्वप्रथम शौच—स्नानादिसे पवित्र होकर आसन—शुद्धि करके भस्म तथा रुद्राक्ष धारण करे। तदनन्तर जपका संकल्प कर गणेशादि देवोंका स्मरण करे। यथासम्भव पञ्चाङ्ग—पूजन करन्यास एवं अङ्गन्यास करे। अनन्तर मृत्युञ्जयदेवताका इस प्रकार ध्यान करे—

ॐ चन्द्रोद्भासितमूर्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्धस्ताब्जेन दधत् सुदव्यममलं हास्यास्यपङ्केरुहम्।

सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतलैः पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं बिभ्रतमक्षयं पशुपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्।।

तात्पर्य यह है कि ' मैं उन मृत्युञ्जय भगवान्का स्मरण करता हूं, जो अक्षय—अविनाशी हैं। जिनके केश चन्द्रमासे सुशोभित हैं। जो देवताओंके स्वामी हैं तथा जिन्होंने अपने करकमलमें अमृतका दिव्य एवं निर्मल विशाल पात्र धारण कर रखा है। जिनका मुखकमल हास्यमय (प्रसन्न) है और जिनके तीनों नेत्र— सूर्य, चन्द्रमा एवं अग्निमय हैं। जिनके करतलमें पाश, अक्षसूत्र (रुद्राक्षमाला), अंकुश और कमल है।'

इसके बाद मानसोपचार—पूजा करे—

प्रत्येक पुष्पादि पदार्थको अर्पित करनेके लिये आचमनीसे जल

छोड़ना चाहिये।

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (पृथिवीरूप 'लं' बीज गंध है)।

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (आकाशरूप 'हं' बीज पुष्प है)।

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि (वायुरूप 'यं' बीज धूप है)।

ॐ रं तेजसात्मकं दीपं समर्पयामि (तेजरूप 'रं' बीज दीपक है)।

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि (अमृतरूप 'वं' बीज नैवेद्य है)।

ॐ सं सर्वात्मकं मंत्रपुष्पं समर्पयामि (सर्वस्वरूप 'सं' बीज–मंत्र पुष्प है)।

मानस–पूजा करनेके पश्चात् एकाग्र–मनसे संकल्पित मंत्रसे मृत्युञ्जयका जप करना चाहिये।

जप समाप्त होनेके बाद पुनः अङ्गन्यास एवं करन्यास करके मृत्युञ्जय देवताको जप–निवेदन करे तथा हाथ में जल लेकर मंत्र–जप–सिद्धिके लिये नीचे लिखे गये श्लोकका उच्चारण करे–

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।

तत्पश्चात् 'अनेन यथासंख्याकेन' (जो जपकी संख्या हो, यथा– 'सपादलक्ष(सवा लाख)–संख्याकेन मृत्युञ्जयजपाख्येन कर्मणा श्रीमहामृत्युञ्जयदेवता प्रीयतां न मम।' – यह कहकर जल छोड़ दे।

उपर्युक्त प्रकारसे जपको अर्पित करके प्रार्थना करे–

मृत्युञ्जयमहारुद्र त्राहि मां शरणागतम्।
जन्ममृत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः।।

'हे मृत्युञ्जय! महारुद्र! जन्म–मृत्यु तथा वार्धक्य आदि विविध रोगों एवं कर्मोंके बन्धनसे पीड़ित मैं आपकी शरणमें आया हूं, मेरी रक्षा करो।'

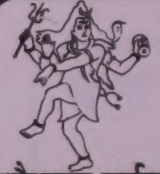
मंत्रोच्चारण, पूजन एवं जपादि–कर्ममें जाने–अनजानेमें त्रुटि होना सम्भव है, अतः उस दोषकी निवृत्तिके लिये देवतासे क्षमा–याचना करनी चाहिये–

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।

सभी कर्मों (श्रौत–स्मार्त आदि)– के द्रष्टा एवं साक्षी भगवान् विष्णु होते हैं, अतः उनका स्मरण करनेसे वे प्रमाद, आलस्यादि के कारण कर्ममें जो कुछ कर्तव्य छूट जाता है, उसको पूर्ण करते हैं। अतः अन्तमें 'ॐ विष्णवे नमः' का तीन बार उच्चारण करना चाहिये। शास्त्रोंमें कहा गया है–

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः समपूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या जपयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

अनुष्ठानरूप जप–संख्या पूर्ण करनेके बाद जप–संख्याका दशांश होम, होमका दशांश तर्पण, तर्पणका दशांश मार्जन एवं मार्जनका दशांश ब्राह्मण–भोजन कराने पर ही सम्पूर्ण अनुष्ठान माना गया है। यदि उक्त तत्तद् दशांश होमादि कर्म करनेमें किसी विशेष कारणवश असमर्थता हो तो जप–संख्याके दशांश का चौगुना (हजार मालाका दशांश एक सौ तथा उसका चौगुना चार सौ मालाके क्रमसे)– संख्या परिमित जप करनेसे ही जप–कर्म की साङ्गता (पूर्णता) हो जाती है। –कल्याण वेद कथाङ्क



भगवान शंकर का बालकृष्ण दर्शन



कैलाश पर्वत समाधि लगायी, नजर आये श्रीकृष्ण भगवान।
कैलाश पर्वत से चले महादेव, आत खड़े शिव गोकुल में।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।
अन्दर बैठी मात यशोदा, आवाज गयी जब कानों में।
भर मोतियों का थाल यशोदा, ले बाबा तू झोली में।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।
अपने बालक का मुख दिखलाओ, है माता मेरे मन में।
कहा यशोदा सुन रे साधू, शक्ल है तेरी शेरों की।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।
मेरा बालक देख डरेंगा, मैं नहीं बालक लाऊंगी।
कहा भोले ने सुन री माता, ये बालक नहीं है डरने का,
तीन लोक को यही डरावे, मालिक है त्रिलोकी का।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।
गयी यशोदा मात अंगन, विचार करती है मन में।
विचार करके लायी कृष्ण को, ले बाबा तू झोली में।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।
जब दोनों की नज़रां नज़री, शीश निवाया शंकर ने,
दर्शन करके चले महादेव, कैलाश पर्वत पर।।
हरिॐ नमः शिवाय.......।

ओमप्रकाश मेघानी, टूण्डला

कठोर वाणी आग में जलने से भी अधिक दुःखदायी होती है। महात्मा विदुर

ब्रज की होली फाग खेल बरसाने आए हैं नटवर नन्द किशोर

होली और ब्रज एक दूसरे के पर्याय हैं। होली के बिना ब्रज की कल्पना नहीं की जा सकती और ब्रज के बिना होली की, क्योंकि आज से लगभग पांच हजार वर्ष पूर्व ब्रज में स्वयं श्यामा–श्याम ने ऐसी होली खेली थी कि समूचा ब्रज मंडल प्रेम और सौहार्द से भर उठा था।

होली रंगो का त्यौहार है किन्तु असली होली खेलने का मजा उसे ही आता है जो होली के रंगो को पहचान लेता है। बृजवासी होली के स्नेह और प्रेम भरे रंगों को अच्छी तरह पहचानते हैं। वे होली के रंगो के प्रेम को संयम के पानी में मिलाकर लोगों पर डालना पंसद करते हैं और अबीर में क्षमा और गुलाल में ज्ञान की झलक होती है। इसलिए देश भर से श्रद्धालु भक्त नंदगांव, बरसाना, रावल, वृन्दावन, गोवर्धन बलदेव, जाव, बठैन और महावन में चुम्बक की तरह खिंचे चले आते हैं।

ब्रज की होली में लाठी का इस्तेमाल फूलछड़ी के रूप में होता है। गोपियां कान्हा से रंग डालने को मना करती हैं और जब ग्वालबाल और कान्हा नहीं मानते हैं तो उन्हें दिखावटी डरानेके लिये डंडे का प्रयोग करती हैं। पर उसे चलाते समय यह ख्याल रखती हैं कि उन्हें चोट न लग जाए। बलदेव में तो होली के बाद दाऊजी मंदिर में न केवल वातावरण इन्द्रधनुषी बन जाता है बल्कि भीगे पोतनों से हसी ठिठोली में ग्वालबालों की ऐसी पिटाई करती हैं कि वातावरण प्रेम और सौहार्द से भर जाता है। वृन्दावन में बांके बिहारी मंदिर में जैसी श्रद्धा और भक्ति से अनूठी होली होती है अन्यत्र दर्शनीय नहीं होती। ब्रज में होली जिन–जिन स्थानों पर मशहूर है, उनमें से प्राय: सभी प्रिया–प्रियतम के क्रीड़ास्थल के लिए प्रसिद्ध हैं। केवल फालैन ही ऐसा स्थान है जहां पर भगवान के भक्त प्रह्लाद की अटूट श्रद्धा ने महत्व पाया है।

ब्रज में होली की शुरूआत बसंतपञ्चमी से होती है, जबकि यहां के मंदिरो के भगवान का शृङ्गार अबीर और गुलाल से शुरू हो जाता है और जब प्राय: मंदिर के जगमोहन में गुलाल उड़ाकर भक्तों को गुलाल का प्रसाद दिया जाता है।

बरसाने और नंदगांव की होली: बरसाने की होली फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को मनायी जाती है। इसके एक दिन पहले नंदगांव का पंडा भगवान श्रीकृष्णकी ओर से बरसाने में ब्रज गोपियों को होली खेलने का न्यौता देने आता है। गोपियां पांडे (पंडा) की खातिर माखन मिश्री एवं लड्डुओं से करती हैं और पंडा लड्डुओं से होली खेलता है।

यहां आने वाले श्रद्धालु भक्त प्रतीकात्मक रूपसे कई मन लड्डुओं का भोग लगाते हैं। होली के निमंत्रण के अगले दिन सिर पर पगड़ी बांधे भंग के रंग में रंगे नंदगांव के हुरिहार जब बरसाने आते हैं तो पीली पोखर के पास उनकी अगवानी की जाती है। इसके बाद राधारानी मंदिर में संगीत की गूञ्ज होती है और तभी से शुरूआत होती है टेसू के रंग और गुलाल के बहार की। बरसाना के गुसांई राधारानी का प्रतीक बनकर नंदगांवसे आए कृष्ण और सखाओं के प्रतीक हुरिहारों पर व्यंग्य करते हैं, मीठी–मीठी प्रेमभरी गालियां सुनाते हैं और संगीत समाज की चरम परिणिति में लठमार होली के शुरू होनेका वातावरण बनने लगता है। मंदिर से बाहर निकलते ही रसिया शुरू हो जाते हैं।

फाग खेल बरसाने आए हैं नटवर नंदकिशोर,
घेर लई सब गली रंगीली।
छाय रही छवि छटा रंगीली,
ढप ढोल मृदंगा बजाए हैं वंशी की घनघोर।

हुरिहारों के रंगोली गली में पहुंचते ही **आजु ब्रज में होरी रे रसिया** या अन्य किसी के गायनके साथ जहां पुरुष महिलाओं पर रंग डाल कर होली के खेलने को निमंत्रण सा देते हैं, वहां महिलाएं अपने सुंदर वस्त्रों को रंग से सराबोर होने से बचाने की दृष्टि से पुरुषों पर लाठियों से प्रहार करती हैं जिसे पुरुष वर्ग चमड़े के बने विशेष ढाल से रोकता है। लगातार होली व लाडली लाल की जयकार वातावरण को रसमय कर देती है। हुरिहार प्राय: इस आंनद में दर्शकों को समेटने के लिए उन पर भी गुलाल एवं रंग की वर्षा कर देते हैं और दर्शक इसे प्रसाद रूप में ग्रहण करते हैं। इस प्रकार से बरसाने की होली का यह आमोद प्रमोद समाप्त होता है।

अगले दिन नंदगांव में इसी प्रकार की होली होती है। इस होली में नंदगांव की गोपिकाएं तो लाठी चलाती हैं और बरसाने के हुरिहार ढाल से स्वयं का बचाव करते हैं।।

फालैन की रोमांचक होली: होली वाले दिन मथुरा से लगभग २२ किलोमीटर दूर छाता तहसील के फालैन गांवमें रोमांचकारी होली होती है जहां पर अटूट श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक के रूप में उस धधकती आग से पंडा निकलता है, जिसकी कल्पना मात्र ही दिल को झकझोर देती है। फालैन गांव में होली का केन्द्र प्रह्लाद मंदिर बनता है। इस मंदिर के पास होली के दिन अपरान्ह एक मेला लगता है, जिसमें आसपास के गांवों की टोलियां रसिया, टोल व ठड्डा प्रस्तुत करती हैं। यहां पर होली जलाने का कोई मुहूर्त नहीं होता बल्कि मंदिर में पूजन–अर्चन करने वाला पंडा मंदिर में ही जलते दीपक की लौ से जलने का समय

निश्चित करता है। वह दीपक की लौ के ऊपर हाथ रखता है और जैसे ही उसे यह लौ शीतल लगने लगती है, होली जलाने की वह घोषणा कर देता है।

पंडा पास ही स्थित प्रह्लाद कुंड में पहले स्नान करता है और फिर गीली धोती पहने ही पलक झपकते ही धधकती होली के बीच से निकल जाता है। यह रोमांचकारी कार्य इतनी जल्दी होता है कि कुछ इसे देख पाते हैं कुछको निकल गया के बाद पता चलता है।

दाऊ जी का हुरंगा: चैत्र कृष्ण द्वितीया को श्री दाऊजी महाराजके मंदिर में हुरंगा होता है। हुरंगे के पूर्व ही संगीत समाज होती है। इसके बाद ही दर्शन खुलते ही हुरिहारो द्वारा मंदिर की की गयी परिक्रमा से हुरंगा शुरू हो जाता है। ग्वालबालों के प्रतीक पुरुष गोपियों की प्रतीक महिलाओं पर बाल्टियों से उलीचकर रंग डालते हैं तो महिलाएं पुरुषों के वस्त्र फाड़कर, उनके कोड़े बनाकर गीले कोड़ों से पिटाई करती हैं। मंदिरके प्राङ्गण में एक ओर संगीत चलता रहता है तो दूसरी ओर मदिर के छज्जे से गुलाल वर्षा होती है।

उड़त गुलाल लाल भये बादर, केसर रंग में धोरी रे रसिया।
आजु बिरज में होरी रे रसिया।।

इस सम्पूर्ण आनंद का रसास्वादन करते हैं मंदिर की छतोंमें बैठे हजारों कृष्णप्रेमी भक्तजन। एक ओर रंग–बिरंगे गुलाल की वर्षा से सारा वातावरण इन्द्रधनुषी बन जाता है तो दूसरी ओर–

नंद के तो ते होरी जब खेलूं रे, मेरी पहुंची में घुंघरू जड़ाय।
इलची, दुलची और चौलरी, बाजूबंद नथ गड़वाय।।

इस प्रकार के रसिया मंदिर के कण–कणको संगीत से भर देते हैं। झंडेके लूटने के साथ मंदिर बंद होतेही हुरंगा समाप्त होता है।

अन्य हुरंगे: ब्रज के अन्य हुरंगो में कोसीके पास जाव व बठैन के हुरंगे भी काफी मशहूर हैं। इन हुरंगो की विशेषता यह है कि बलदेवजी जेठ होनेके बावजूद राधारानीसे होली खेलने का प्रस्ताव रखते हैं, जिसे राधाजी स्वीकार तो कर लेती हैं किन्तु झाड़ी की ओट में आकर खेलती हैं। इन हुरंगो में जहां ग्वाल बाल के प्रतीक पुरुष बलदेवजी को गोले के अंदर ही रखते हैं तथा गोपियों का प्रतीक महिलाओं को उनके पास नहीं आने देते हैं वहीं महिलाएं इस कृत्रिम बेरियर को तोड़ने का प्रयास लाठी वर्षा से करती हैं। पुरुष गदर्या नामक लकड़ी के टुकड़े से अपना बचाव करते हैं। इस प्रकार मर्यादा बनाए हुए काल्पनिक होली दाऊजी से खेली जाती है। चैत्र कृष्ण द्वितीया को जाव का हुरंगा होता है, जबकि अगले दिन बठैनका हुरंगा होता है। इन हुरंगोके अलावा महावन, गोवर्धन, गोकुलके हुरंगे भी मशहूर हैं।

होलीका पर्यायवाची चरकुला– नृत्य: चैत्र मासके कृष्णपक्ष की द्वितीया से लेकर दशमी तक ब्रजके विभिन्न अञ्चलों में प्रसिद्ध चरकुला व नृत्य होता है। बैलगाड़ी के पहिये की तरह का बना चरकुला लगभग डेढ़ मन का होता है जिस पर लगभग एक तमेड़ी बांध दी जाती है। व्यवस्था इस प्रकार से की जाती है कि लगभग डेढ़ सौ दीपक एक साथ जल सकें।

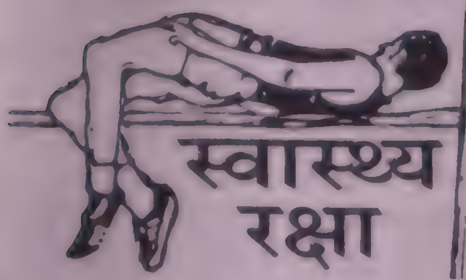
गांव के किसी चौड़े मैदान में बम्ब(बड़ा नगाड़ा), मञ्जीरा, करताल, थाली और अलगोजा वाद्य यंत्रों की संगत और पुरुषों की संगीत स्वर लहरी के मध्य इस चरकुला को अपने सिर पर रखकर गांव की स्त्रीयां नृत्य करती हैं, स्त्रियां इस नृत्य में अधिक प्रवीण होती हैं वे इसके साथ ही दोनों हाथों में कलश के ऊपर दीपक रखकर नृत्य करती हैं। इस साहसिक नृत्य की कल्पना और देखने में बड़ा अन्तर है तथा इस चमत्कारिक कार्य की दक्षता का अंदाजा देखकर ही लगाया जा सकता है। चरकुला मुख्यरूपसे ऊमरी, नगरी, रामपुर, सोंख, अहमलकलां तथा मुखराई गांवों में अधिक होता है किन्तु मुखराई गांव का चरकुला सबसे अधिक मशहूर है।

कुल मिलाकर होली पर ब्रजका वातावरण मस्ती–प्रेम और सौहार्द से भर जाता है और चारों ओर रसिया के स्वर गूञ्ज उठते हैं। **होली खेलन आयो श्याम, आजु याये रंग में बोरो री।**

इन्दौर आश्रम पर नेत्र शिविर लगा

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, काटजू कालोनी में १६ जनवरी को चौइथराम फाउन्टेन ऑफ ह्युमनीटेरियन सर्विसेस चेरिटेबल ट्रस्ट, जिला अन्धत्व निवारण समिति एवं इन्दौर जिला प्रशासन के सहयोग से प्रेम प्रकाश आश्रम द्वारा निःशुल्क नेत्र शिविर का आयोजन संत शंभूलाल की देखरेख में किया गया। जिसमें डॉ. शेखर मंकड़, डॉ. महेश गर्ग, डॉ. श्रेया थत्ते, डॉ. शिल्पा भागवत, डॉ. नविता पाठक, डॉ. रश्मि गुप्ता, डॉ. संतोष रामचंदानी ने २०० से अधिक नेत्ररोगियों का परीक्षण किया। दृष्टिदोष से पीड़ित मरीजों की भर्ती कर उनके लैंस प्रत्यारोपण के आपरेशन चौइथराम नेत्र चिकित्सालय में किये गये। शेष रोगियों को उचित परामर्श, निःशुल्क दवाईयां व जरूरत अनुसार चश्मे दिये गये।

घुटने के दर्द का प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा उपचार



कोई भी रोग या बीमारी अचानक नहीं आ जाती। जब हम कुदरत के नियमों को भंग करते है। कुदरत के संकेतों की अवहेलना करते हैं, खान–पान के गलत तरीके अपनाते हैं, धूम्रपान और मद्यपान जैसी खराब आदतें डाल लेते हैं या शरीर के किसी अंग से अत्यधिक काम लेते हैं, तब हमारे शरीरमें रोग बढ़ जाता है। आधुनिक सुख सुविधा वाला जीवन बिताने, अतिस्निग्धा तैलीय पदार्थों के सेवन आदि से वात एवं रक्त की विकृति बढ़ती है। जिससे घुटनों में तीव्र पीड़ा होती है। अधिकतर वेदना संधियो में होती है व अंग विकृति देखने को मिलती है। अधिकांशत: यह शिकायत मोटे व आलसी लोगों में देखी जाती है तथा शरीर का वजन बढ़ने से जोड़ों पर बोझ बढ़ता है, जिससे जोड़ों का रोग, चोट पहुंचना, लसिका पट्टी का खुरदरा होना, गलत खान–पान से रक्त में एक प्रकार की खटास का बढ़ना, क्षारत्व का कम होना, अपच और अजीर्ण भी इसके कारण हैं।

ठंडे पेय एवं गलत आहार–विहार से रक्त में विकार बढ़ता है। चिकित्सक घुटनों में भरे द्रव्य को सिरिंज से खींचकर बाहर निकालते हैं व पीड़ा कम करने के लिये जूलेकन केंटाजोन का मिश्रण जोड़ों में पहुंचाते हैं जिससे कुछ राहत मिलती है। पर कुछ समय बाद यह रोग फिर उभर आता है। इसकी रोकथाम के लिये वतहर वनस्पतियों का सेवन, भाप का प्रयोग, सूर्य किरणों की गर्मी व लेप से लाभ मिलता है। खटास, इमली, कोकम, नींबू, अचार, टमाटर, दही आदि का सेवन न करें। शरीर के किसी भी भाग में दर्द होता है तो इसका अर्थ यह है कि उस भाग में कार्बन डाईआक्साइड, पानी तथा अन्य विषाक्त पदार्थ या वायु घर कर गयी है।

घुटने हमारे शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंग हैं। हमारे शरीर का सम्पूर्ण भार हमारे पैर उठाते हैं। इस कारण पूरे पांवकी देखभाल अच्छी तरह करनी चाहिये।

आहार द्वारा घुटने के दर्द का उपचार

* मेथीदाना को बारीक पीस लें। एक चम्मच मेथीदाना चूर्ण प्रात: ताजे जल के साथ लें।

* प्रात: खाली पेट ३–४ अखरोट की गिरियां अच्छी तरह चबाकर खाएं।

* रोज नारियल की गिरी का एक टुकड़ा जरूर खाएं। यदि ताजा नारियल न मिले तो सूखे नारियल की गिरी खाएं।

* रात को १०० ग्राम खजूर एक गिलास पानी में भिगोकर रखें। सुबह निहार मुंह से इसे चबाकर खाएं।

* प्रतिदिन ३–४ लहसुन की कलियां पानीके साथ निगलें।

* छोटी हरड़ को कूट–पीसकर छान लें। रात को सोते समय ढाई ग्राम हरड़ चूर्ण गुनगुने पानी या दूध के साथ लें।

* १० ग्राम सोंठ, १० ग्राम अजवाइन, १०ग्राम काला नमक, २० ग्राम सूखा आंवला चूर्ण चारों को पीसकर मिला लें। आधा चम्मच रात को सोते समय दूध के साथ लें।

सेंक द्वारा घुटने के दर्द का उपचार

* घुटने के दर्द वाले स्थान पर पहले तेल लगाएं। फिर आक के पत्तों को गर्म करके उस स्थान पर रखें और ऊपर से रुई रखकर लाल कपड़े की पट्टी बांधे।

* निर्गुण्डी के ताजे ५–६ पत्तों को कुचलकर मिट्टी के घड़े में डालकर ढक्कन लगाकर गर्म करें। थोड़ी देर बाद पत्ते गर्म होनसे नर्म हो जाएंगे। इन गर्म पत्तों को घुटने के दर्द वाले स्थान पर बांधकर ऊपर से कपड़े की पट्टी बांधे। दिन में दो बार ऐसा करें।

* अरण्डी के पत्तों को पीस लें। थोड़ा सा सरसों का तेल और थोड़ा सा कपूर मिला लें। घुटनों के ऊपर लेप करके कपड़ा बांधे। अब इसके ऊपर गर्म सेंक करें।

* दो लीटर पानी में थोड़ी सी नीम की पत्तियां , थोड़ी सी अजवाइन, मेथीदाना व आधा चम्मच नमक डालकर पानी को उबालें। फिर छान लें। तैयार किये गये पानी में दो नैपकिन डालकर इनसे गर्म–गर्म ही सेंक करें।

* १०० ग्राम अजवाइन में ५ ग्राम सोंठ व ५० ग्राम काला नमक डालकर सूखी कढ़ाई में इसे खूब भूनें। गर्म–गर्म ही एक रुमाल में बांध लें। इससे दोनों घुटनों पर सेंक करें।

हिदायतें: सेंक करने के बाद १५ मिनट तक चादर ओढ़कर लेटें व कुछ खाएं पिएं नहीं। तेज हवा में बैठकर सेंक न करें। कोई एक नुस्खा आजमाएं और विश्वास के साथ निरन्तर करने

पर ही अनुभूत लाभ मिलेगा।

योगा द्वारा घुटने के दर्द का उपचार

* घुटने का दर्द ठीक करने के लिये सीधे पीठ के बल सोएं और घुटनों को मोड़ते हुए पैरों को साइकिल की तरह चलाएं।

* इसी प्रकार लेटकर घुटनों को बिना मोड़े २० बार पांव ऊपर नीचे करें।

* घुटनों को मोड़ते हुए वज्रासन लगाएं व नीचे नर्म तकिया रखें, यह आसन कम से कम पांच मिनट तक नियमित करें।

* पेट के बल लेटकर पैरों को मोड़ें और दोनों हाथों से एड़ियों को पकड़ें।

* दोनों घुटनों पर लाल रंग के सूती कपड़े की पट्टी बांधे। कम से कम ६ इंच चौड़ी होनी चाहिये। नित्य प्रात: ७ से ७:३० बजे में सूर्य के सामने पांव को रखें ताकि सूर्य की किरणें घुटने पर आराम से पड़ सकें।

* नित्य रात को तेल मालिश करें। तेल लाल होना चाहिये।

विशेष उपचार

* प्रात:काल दो अखरोट की गिरी चबा चबाकर खायें।

* अपने भोजन में हरे पत्तेदार सब्जियां खाएं।

* प्रतिदिन आधा चम्मच मेथीदाना प्रात:काल खाएं।

* रोजाना सुबह तुलसी के पांच पत्ते खाएं।

* २० ग्राम अजवाइन, ५ ग्राम काला नमक, ५ ग्राम सोंठ, ६ ग्राम काली मिर्च पावडर मिलाकर रखें। प्रतिदिन २ ग्राम यह चूर्ण लें।

हिदायत: दर्द व सूजन में किसी प्रकार की खटाई, अचार, छाछ, दही, टमाटर आदि तथा वायुजन्य खाद्य पदार्थ न लें। जहां तक हो सके दालों का सेवन कम कर दें। मैदे व बेसन से बनी तली चीजें न खाएं। शीतल पेय, आईस्क्रीम, बर्फ व ठंडे पानी का सेवन बिल्कुल भी न करें।

—डॉ. मोन्टो भारतीय (निरोगी काया केन्द्र जयपुर)

पानी भी एक दवा है- इसके चमत्कार देखें

हमारे शास्त्रोंमें लिखा है—'**अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्**' अर्थात् अजीर्णमें पानी दवाका काम करता है और भोजन पचनेके बाद पानी पीनेसे शरीरमें बल होता है। बहुतसे रोगोंमें यह दवाका काम करता है। ठंडे और गरम जलमें अलग—अलग औषधीय गुण हैं। कई रोगोंमें ठंडा पानी और कई रोगोंमें गरम पानी दवाका काम करता है।

जब किसी किसीको आप आगसे जलने या झुलसनेसे आक्रान्त देखें, तुरन्त उसके जले—झुलसे अङ्गको ठंडे पानीमें कम से कम एक घंटा डुबोकर रखें— उसे परम शान्ति मिलेगी, जलन दूर होगी और घाव या फफोला नहीं होगा। यदि पूरा शरीर जल जाय तो तुरन्त उसको बड़े पानीके हौजमें या तालाबमें डुबो दें। साँस लेने के लिये नाकको पानीके बाहर रखें। यह याद रखें कि जला—झुलसा अङ्ग पानीमें लगातार एक या दो घंटे डूबा रहे। उस पर पानी नहीं छिड़कना चाहिये— इससे हानि होती है। पानी में डुबोये रखना ही कारगर इलाज है। यदि अस्पताल ले जानेके चक्करमें समय नष्ट करेंगे तो फफोले पड़ जायंगे, घाव सांघातिक बन जायंगे— जलन और कष्ट बढ़ जायगा। बहुतोंको ऐसा झूठा भ्रम है कि जले अङ्गको पानीमें डुबोनेसे घाव बढ़ेंगे। सच्ची बात यह है कि जले अङ्गपर पानीके छींटे देने या पानी डालनेसे घाव बढ़ जाते हैं। हम तो पीड़ित अङ्गको लगातार एक दो घंटे पानीमें डुबोये रखनेकी सिफारिश करते हैं। तभी आपको ठंडे पानीका चमत्कार दिखायी देगा।

इसी तरह जब किसीको मोच आ जाय या चोट लगे तो तुरंत उस स्थान पर खूब ठंडे पानीकी पट्टी लगा दे— बर्फ भी लगा सकते हैं। इससे न तो सूजन होगी, न दर्द बढ़ेगा। गरम पानीकी पट्टी लगायेंगे या सेंक करेंगे तो सूजन आ जायगी और दर्द बढ़ जायगा। यदि चोट लगने या कटनेसे खून आ जाय तो वहां बर्फ या खूब ठंडे पानीकी पट्टी चढ़ा दें, आराम होगा।

गरम पानीका लाभ वातरोगों— जोड़ोंका दर्द, कमरका दर्द, घुटने का दर्द, गठिया—कंधेकी जकड़नमें होता है। इसमें गरम पानीका या भापका सेंक दिया जाता है।

इजेक्शन लगानेके बाद यदि उस स्थानपर सूजन आ जाय या दर्द बढ़े तो ठंडे पानीकी पट्टी या बर्फ लगायें। वहां गरम पानी का सेंक न करें।

यदि रातमें नींद न आती हो तो सोनेके पहले दोनों पैरोंको घुटनों तक सहने योग्य गरम पानीसे भरी बाल्टी या टबमें पंद्रह मिनट डुबोये रखें— इसके बाद पैरोंको बाहर निकालकर पोंछ लें और सो जायँ। नींद आयेगी। यह ध्यान रखें कि जब गरम पानीमें पैर डुबायें तब सिर पर ठंडे पानीमें भिगोकर निचोड़ा हुआ तौलिया अवश्य रखें।

आपने अस्पतालों और नर्सिंग होमोंमें देखा होगा कि पतले दस्त या उल्टी—दस्तके रोगियोंको सेलाईनका पानी चढ़ाते हैं। यह सेलाईन क्या है— नमकीन पानी है। इससे रोगी ठीक हो जाता है। इसी प्रकार बच्चोंके पतले दस्त या डायरियामें जीवन—रक्षक घोल बनाकर देनेसे बच्चे ठीक हो जाते हैं। शरीरमें पानीकी कमी न होने पाये इसीलिये यह घोल दिया जाता है। पानीकी कमीसे मृत्यु हो जाती है। यही कारण है कि रोगीके शरीरमें पानी पहुँचाया जाता है— चाहे मुखसे हो या सेलाईन चढ़ाकर। ये पानी के कुछ चमत्कार है।

सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संत मण्डली का देशाटन

रायपुर, धमतरी आश्रम का वार्षिकोत्सव, भाटापारा में माता समझबाई का वर्सी उत्सव

मनीला में हुआ मिनी मेल मिलाप मेला

सत्संग यात्रा दर्शन ज्ञान चर्चा

मनीला 7 से 12 जनवरी 2006

मुम्बई खार स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम का वार्षिकोत्सव पूर्ण करने के बाद ६ जनवरी २००६ को रात्रि १:३० बजे मुम्बई के अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल से मनीला के प्रेमियों के विशेष आग्रह पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज संत मण्डली के साथ विमान द्वारा फिलीपीन्स की राजधानी मनीला के लिये रवाना हुए। पूज्य महाराजश्री के साथ संत हरिओमलालजी, संत हरीशकुमार, संत लक्ष्मणलाल जी साथ थे। सिंगापुर होते हुए सायं ५:३० पर मनीला पहुंचे, इसके पूर्व सिंगापुर में जाकरता से आये हुए गोप मामताणी, मिर्चूमल, श्यामलाल, दलपतजी भी महाराजश्री के साथ मनीला यात्रा पर हो लिये। काफी बड़ी संख्या में प्यासे प्रेमियों का समूह महाराजश्री की अगवानी के लिये विमान तल पर आया हुआ था। अन्य देशों से भी भक्तगण पूज्यश्री का पावन सानिध्य पाने को जिसमें हांगकांग से संत नामदेव जी के साथ कुछ प्रेमी भी आये थे। दुबईसे कैलाश मनवानी, राम मोलानी साथियों सहित आये हुए थे। स्वागत सत्कार के बाद पूज्यश्री व संत मण्डल को जयपुर के प्रेमी भक्त श्री देवराजजी जो कि अब व्यवसाय की खातिर मनीला ही रहते हैं, के घर पर कारों के काफिले में ले जाया गया, यहीं पर महाराजश्री संतों के निवास की व्यवस्था की गयी थी। अन्य प्रेमी जो कि संख्या में ६५ थे, की व्यवस्था हॉस्टल में की गयी थी।

७ जनवरी को सायंकालीन सत्संग का आयोजन हिन्दू मंदिर में किया गया था। पूरा मंदिर प्रांगण भक्तों से खचाखच भरा हुआ था। ८ जनवरी रविवार को इसी मंदिर में दोपहर ११:३० से १२:३० तक सत्संग आयोजनमें आये हुए भक्तों ने सद्गुरु महाराज के दिव्य दर्शन–सत्संग का लाभ लिया। इसीके साथ भण्डारे का प्रसाद भी सभी ने पाकर आत्मतृप्ति महसूस की। इस दो मंजिले हिन्दू मंदिर में नीचे भोजनशाला उसके ऊपर मंदिर जिसमें भगवान राधाकृष्ण, सीताराम, लक्ष्मीनारायण, शिव परिवार के अतिरि श्री झूलेलाल भगवान व श्री गुरु ग्रंथ साहिब स्थापित किये गये हैं। साई टेऊँराम बाबा के साप्ताहिक प्राकट्य दिवस हर शनिवार को भजन सत्संग कीर्तन का आयोजन नियमित किया जाता है। ९ जनवरी को प्रात: १०:३० बजे पिशु मीरचंदानी जिनका निवास स्थान तगेताई में पहाडियों के मध्य था, के यहां गये। जमीन से काफी ऊंचाई पर स्थित इस मनोरम दृश्यावलीको निहारते यहां भजन कीर्तन उपरात भोजन प्रसादी सद्गुरु महाराज के संग संतों प्रेमियों ने पायी। यहा पर मनीला के अलावा अन्य देशों से आये प्रेमी शामिल हुए, ऐसा लग रहा था मानों मिनी मेल मिलाप मेला शिविर हो। हरियाली आच्छादित पहाड़ों खेत खलिहानों को देखते हुए सायं ६ बजे प्रवास स्थल देवराज के यहां पर पहुंचे। सभी यात्री भी तैयार होकर सत्संग में शामिल हुए।

११ जनवरी को प्रात: ८:३० बजे दो घन्टे की बस से यात्रा के बाद Pagsanjan Falls Lodge Resort को देखने प्रेमियों सहित पहुंचे। नौका द्वारा प्रकृति का अद्भुत नजारा! दो पहाड़ों के मध्य सुंदर झरना! यह झरना अमेरिका के विश्वविख्यात प्रपात से भी अच्छा लग रहा था। लगभग डेढ घन्टे तक नौकायन द्वारा इस मनोहर दृश्य को सबने गुरुदेव के सानिध्य में देखा। वापिसी यात्रा बस द्वारा ही हुई, जहां पर अन्य देशों से आये हुए गुरुभक्तों ने भजन अंताक्षरी करते हुए आनंदविभोर हो इस यात्रा को पूरा किया। सभीके आवास सत्संग पर्यटन की व्यवस्था देवराज ने अपने साथियों के साथ बड़े ही सुदंर रूप से की थी। अतिंम दिवस १२ जनवरी को प्रात: ८:३० से ९:३० बजे तक सत्संग सरिता का अमृतपान भक्तों ने देवराज के निवास पर ही किया। तत्पश्चात् मनीला के प्रेमियों को पुन: आने के आश्वासन के बाद सिंगापुर के रास्ते वायुयान द्वारा मुम्बई रवाना हुए। मुम्बई रात्रि १०:३० बजे पहुंचे। मनीला के हिन्दू मंदिर में सत्संग चर्चा के कुछ कण–

संत हरीशलालजी ने सभ काम हो रहा है, करते तुम हो कन्हैया मेरा नाम हो रहा है। संत हरिओमलालजी ने भली दुनियां जी करि कारि तूं, पर साईअ खे न विसारि तूं। मन के द्वारा स्मरण चिन्तन भी होवे और शरीर के द्वारा कर्तव्य भी पूरा करना है। शुभ कर्म धर्म का आचरण हरिनाम ही सच्चा धन है। यही दूजे

परलोक में काम आएगी। यहां एकत्रित किये हुए वस्तु पदार्थ यहीं रह जायेंगे। संतों का सङ्ग गुरु की शरणागति होकर इस मानव देह में आत्म कल्याण नहीं किया तो संसार में आना ही असफल होगा। **मानुषा तो हरि भजन, माया तो कुछ दान, जोबन तो शीलवंत, कबीर जाया सो परिवान।** **संत नामदेवजी** महाराज ने बताया कि संसार में आकर मन को लगाकर सुख ढूढंना व्यर्थ है। **कहे टेऊँ संसार में बात यही है सार, भजन करो भगवान का, छोड़ो विषय विकार।** भगवान शंकर ने पार्वती से कहा– **उमा कहूं मैं अनुभव अपना, सत् हरि भजन जगत सब अपना।** सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज जिनकी वाणी हम सुन रहे हैं एवं सभी संतों का भी यही निर्णय है कि यह मानुषा देही हमें भगवान का भजन करने के लिये ही मिली है, परंतु दुनियावी बातों में हम वो प्रधान कार्य भूल गये हैं। संत महात्मा सद्‌गुरु हमें बार बार स्मरण करा रहे हैं कि नाम स्मरण करो, संसार के अन्तर्गत मन को न फंसाओ यही जीवन का सार है।

हमारे **प्यारे गुरुदेव** ने अमृतरस से प्रेमियों को तृप्त करते हुए कहा–

निर्मानता सच्चाई ह्रदे रखा सदाई, आहे इच्छा ईहाई
तो साणु मन मिलाया, हे ईश ध्यानु तुहिंजो दिलि में सदा लगायां,
हरिदम करे नीजारी, तोखां मंगा मुरारी,
भक्ति दिजांइ प्यारी, जहिं साणु दिलि में रिझायां।

भजन गाते हुए बताया कि मानव देही में ईश्वर की भक्ति करना ही सच्चा शृङ्गार है।

पशु ते मानुष किया, मानुष से किया देव।
कहे टेऊँ गुरुदेव ने कीना अलख अभेव।।

गुरुदेव अपने स्वरूप का ज्ञान देकर अज्ञान का निवारण करते हैं। अज्ञान का तम ही इस जीव को जन्म जन्मातंरो में भटकाता है। जगतगुरु शंकराचार्य ने अपनी वाणी में बताया कि इस देह के अन्तर्गत मन इन्द्रियां ही शत्रु व मित्र हैं। सही दिशा की ओर जीवन लगाया तो मित्र है। आप विदेश में रहकर अपनी सनातन संस्कृति को न भूलें। मांस मदिरा इत्यादि दुर्व्यसनों का सेवन न स्वयं करें न संतान को करने दें। ऐसे व्यञ्जनो को भी न खायें जिसमें अपरोक्ष रूप से मांस का समावेश हो। हिन्दुओं के लिये गाय माता समान पूज्य है। परमात्मा ने गीता में कहा है–

युक्तहार विहारस्त्य युक्त चेस्टस्त्य कर्मस्तु। युक्ति से आहार विहार करने से मन की शुद्धि होती है। संतों के निर्मल संग से मानव को कर्म से शुद्ध रखे सात्विक आहार से मन सात्विक होकर ईश चिन्तन में लगेगा।

मुम्बई 13 जनवरी 2006

खार आश्रम पर विश्राम उपरांत १३ जनवरी को प्रातः ८ बजे माहीम आश्रम के व्यवस्थापक प्रेमी श्री होतचन्दजी का स्वास्थ्य देखने पहुंचे। उनकी अस्वस्थता को देखते हुए अन्य प्रेमियों को माहीम आश्रम की सेवा करने की जिम्मेदारी सौंपी। सायंकालीन सत्संग सभा खार आश्रम पर हुई। जहां पर मुम्बई के प्रेमियों ने सद्‌गुरु महाराज के सत्संग दर्शन का लाभ लिया। रेलगाडी व्यवधान के कारण रायपुर के लिये रेलयात्रा रद्द कर विमान द्वारा १४ जनवरी प्रातः १०:३० बजे चलकर १२:३० बजे रायपुर पहुंचे।

रायपुर 14 से 17 जनवरी 2006

प्रेम प्रकाश आश्रम का 10वाँ वार्षिकोत्सव

भूले भटके हुए जीवों को सतमार्ग पर लाने के लिये व जन्म जन्मांतर के बिछुड़े हुए जीवों को प्रभू से मिलाने के लिये प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद मंगलमूर्ति आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज के पंचम गाद्दीनशीन पीठाधीश्वर पूज्य सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराजव संत मण्डल १४ जनवरी को दोपहर लगभग १२:३० बजे ज्योंही रायपुर के विमान तल पर विमान से बाहर आया। बड़ी संख्या में अगवानी के लिये उपस्थित प्रेमियों ने हर्षित होकर सद्‌गुरु भगवान की जय जयकार से विमानतल गुञ्जा दिया। ३५ कारों के काफिले में महाराजश्री व संतों को एक वाहन रैली में रायपुर शैलेन्द्र नगर स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम से कुछ पहले लाया गया। यहां पर काफी संख्या में प्रेमी महिला पुरुष नाचते गाते झूमते बैण्डबाजों की मधुर धुन पर खुशीयां मनाते महाराजश्री को आश्रम पर लाये। यहां पूज्यश्री आचार्यश्री व सद्‌गुरु भगवान को प्रणाम कर मञ्च पर विराजमान हुए। रायपुर मण्डली से कुछलक्षेम पूछकर पल्लव पाकर सबको आशीर्वाद दिया।

सायंकालीन सत्संग सभा में धमतरी आश्रम के **संत टेकचन्दजीने आया आया थी संत सच्चारा** व **संत दयाप्रकाशजी** ने गुरुमहिमा का वर्णन किया। अनेक गुणीजनों व संतों के बाद **पूज्य महाराजश्री** ने अमृतपान कराते हुए कहा–

अम्मा मूंखे मोकल दे, घर कीन वणे तुहिंजो, आउं वेन्दुसि जोगिनि दे आचार्यश्री मन की स्थिति को समझाते हुए कह रहे हैं कि उन्होंने बचपन में ही इस नश्वर घर से मन को उपराम कर दिया व अविनाशी घर की प्राप्ति की ओर कदम बढ़ा लिया। अन्ततः सफलता ने उनके कदम चूमे और उन्होंने परम पदवी को पाया। तो हम भी उनके बताये हुए मार्ग पर चलकर अपना कल्याण करें।

15 जनवरी: आज तो प्रेमियों का प्रेम उछालें मार रहा था। क्यों कि आज एक तो पावन शनिवार आचार्यश्री के अवतार धारण करने का दिन और दूसरा हाजरांहजूर महाराजश्री का मकर संक्रान्ति के दिन शुभ आगमन। इस दिन सूर्य दक्षिणायन से उत्तरायण की ओर आया है। और कल ही पूज्यश्री भी हमारे मन की दशा को दक्षिण से उत्तर की ओर मोड़ने के लिये पधारे हैं। आपको पता ही होगा कि उत्तर में धन का भंडार कुबेर स्थित है और यहां पर ज्ञान के भडार गुरुदेव पधारे हैं। रायपुरवासियों के भाग्य हैं जो शुभ दिन और शुभ त्यौहार पर सद्‌गुरु संत दर्शन सेवा सत्संग का सुयोग प्राप्त हुआ है। ऐसा **संत नरेशलाल** इन्दौर ने अपने प्रवचनों में कहा। ग्वालियर आश्रम के **संत हरिओमलालजी** ने **हे प्यारा बोल मुख सां राम तूं** भजन के माध्यम से समझाया कि नाम जपने का फल है–शान्ति! वो तब मिलेगी जब मन को एकाग्र करके गुरुदेव के दिए हुए नाम का स्मरण करेंगे। आखिर में **श्री गुरुदेव** ने करुणा भरे स्वर में श्री प्रेम प्रकाश दोहावली का दोहा बोलते कहा–

सद्‌गुरु सद्‌बुद्धि दान दे, हरो कुमति सुविचार।
कह टेऊँ कृपा करे, दीजे ज्ञान भंडार।।

सूर्य चन्द्रमा धरती तारे आदि इनका विस्तार अनन्त है, और इनको छोटीसी आँख द्वारा देख सकते हैं मगर उसी आँख के आगे अंगुली आ जाए तो कुछ भी नजर नहीं आयेगा। ठीक उसी प्रकार छोटीसी बुद्धिरूपी नेत्र के सामने अपवित्र विचार आ जाय तो परमात्मा की बताई हुई उत्तम सृष्टि प्रकृति के अद्‌भुत व मनमोहक नजारों का आनन्द नहीं ले पायेंगे। इसके लिये पहला व अन्तिम मार्ग नियमपूर्वक जप करने का बतलाया श्री गुरुदेव ने। **जपेसिद्धि जपेसिद्धि जपेसिद्धि न अन्यथा।** नाम जप की ओर संगत को प्रेरित करके आज की सत्संग सभा को पूर्ण किया महाराजश्री ने पल्लव पाकर।

सयंकालीन सत्संग में उल्हासनगर से आयी **दादी मीरा** ने **खुशि रहनि शल शेवाधारी** भजन गाकर शेवाधारियों का उत्साहवर्धन किया। तत्पश्चात् रायपुर की बालक बालिका मण्डली द्वारा **सांस्कृतिक कार्यक्रम** की सशक्त प्रस्तुति ने सबका मन मोह लिया। छोटे छोटे बालक बालिकाओं को श्रीकृष्ण सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी शन्तिप्रकाशजी महाराज, सद्‌गुरु स्वामी हरिदासरामजी महाराज, माता कृष्णा व पिता चेलाराम के स्वरूप बनाकर खण्डू टण्डेआदम वृन्दावन का नजारा पेश किया गया। दो बालिकाओं ने **धन्य अवसर आज का है, स्वागतम्, शुभ स्वागतम्** गाकर नृत्य किया। दायें बायें ४–४ बालिकाओं व बीच में भगवान श्रीकृष्णने मनोहारी नृत्य **जो भी अमरापुर दरबार अचे, राम जे रंग में झटपट रचे** चल रहे गीत पर प्रस्तुत किया। तीसरी मञ्चीय प्रस्तुति में दायें बायें कुल आठ बालक बालिकाए फिर कृष्ण भगवान, माता कृष्णा पिता चेलाराम नृत्य नाटिका में कैसेट पर चल रहे भजन **जग में पावन तेरा अमरापुर धाम, आऐं हैं हम दास तेरे**, इस नाटिका में खिल्लू के डूबने व निकालने का दृश्य भी बच्चों ने पूरे मनोयोग से कर सद्‌गुरु महाराज सतों प्रेमियों की तालियां बटोरीं। **सारे शहर में आहे चर्चा, जल्दी थी तैयार हलो, जालें मरदें बार बुढा सभु अमरापुर दरबार हलो, मेलो आहे सद्‌गुरु टेऊँराम जो मेलो आहे।** के गायन पर बीच में सद्‌गुरु टेऊँरामजी महाराज व गोलाकार आकृतिमें ६ बालिकाए ने ऐसा मनमोहक नृत्य पेश किया कि कार्यक्रम के अत मे सभी के मुख से वाह ही निकली।

माता पुष्पादेवी व श्री चतुरभान वीडियोग्राफर के अथक प्रयासों से बच्चों ने कई दिनों तक पूर्वाभ्यास करके आज इस मंत्रमुग्ध करने वाले कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। सद्‌गुरु महाराज ने आशीर्वाद स्वरूप पखर व लिफाफे देकर उनका उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि जैसे घर में रामायण को पढ़ें रामायण का सीरियल देखें तो देखा हुआ दृश्य याद हो जाता है व आँखों में छप जाता है वैसे ही गुरु महाराज की लीलाएं इस तरह के कार्यक्रमों द्वारा मन पर अच्छा प्रभाव डालती हैं। यहां आश्रम द्वारा सिलाई कढ़ाईका प्रशिक्षण केन्द्र भी चल रहा है जिसमेंसे ९ बालिकाओं ने उज्जैन में जाकर परीक्षा दी व उत्तीर्ण हुई, उन्हें भी सद्‌गुरु महाराज के करकमलों से प्रमाणपत्र दिये गये। अंत में **श्री गुरुदेव** ने प्रेम की महिमा करते हुए कहा–

प्रेम बिना पहुंचे नहीं, को जन हरि के धाम।
कह टेऊँ तांते जपो, प्रेम सहित हरि नाम।।

नाम जप के द्वारा सभी मनोरथ पूरे होते हैं मगर नाम के साथ प्रेम लगन व श्रद्धा का होना बहुत जरूरी है। प्रेम के सिवाय मन को शांति नहीं मिलेगी।

कल्पवृक्ष के बीज को गुरु बोयो उर मांहि।
श्रद्धाजल सींचे बिना ऊग सकत नांहि।।

कल्पवृक्ष की विशेषता है कि उसके नीचे बैठकर जिस पदार्थ की इच्छा करते हैं वो तुरंत मिल जाता है। ऐसे कल्पवृक्ष का बीज जो कि नाम है, गुरुदेव ने हमारे हृदयरूपी खेत में बो दिया है अब हमें श्रद्धारूपी जल से सींचना है अर्थात् श्रद्धा व प्रेम से नाम का जप करके अपना कल्याण करें।

सायंकालीन सत्संग के बाद आज **शदाणी दरबार** के महंत **संत युधिष्ठिरलाल** जी प्रेमियों सहित महाराजश्री से मिलने आए।

16 जनवरीः आज प्रातःकालीन सत्संग सभा को सम्बोंधित करते हुए मुरैना के **संत प्रतापरायजी** ने **ज्ञान जो दीयड़ो बारि प्यारा, गुरुमुख पहिंजे मन मंदिर में** भजन व वैराग्य शतक के श्लोक को बोलते हुए **जिसके अति भीलके भाल भले, अस दीपक तो मन धाम जले।** सद्गुरु सर्वानन्दजी महाराज ने चूड़ाला शिखरध्वज कथा में भी लिखा है जब इस जीवके जन्म—जन्मके पुण्य आ फलते हैं, तभी इस संसार में संत समागम प्राप्त होता है। तो जो ये हमको संत समागम मिला है उसमें हंसरूपी संतो के मोतीरूपी वचनों को अपने हृदयरूपी मंदिर में ज्ञानरूपी प्रकाश से उज्जवल करें। सभा के अन्त में **पूज्यश्री** ने माधुर्यरस से भरी अमृतवाणी में कहा—

कह टेऊँ मन चेत ले, अब कुछ बिगड़ी नांहि।
दया धर्म शुभ कर्म कर, हरि स्मरो मन मांहि।।

जो समय हाथ से निकल गया उसके बारे में सोचकर समय गंवाना नहीं क्योंकि गुजरा हुआ वक्त नदीके उस पानी के समान है जो समुद्र में समा चुका है। **गो गोचन जह लग मन जाइ, सो सब माया जानो भाई** भगत नामदेव ने ७२ बार भगवानके दर्शन किये फिर भी स्थायी शान्ति नहीं मिली तब सतपुरुषों की शरण में जाकर उनसे युक्ति लेकर परम शान्ति प्राप्त की। तो हम भी सद्गुरुदेव के बताये हुए मार्ग पर चलने का प्रयास करें।

विशिष्ट विवाहः आज दोपहर सद्गुरु भगवान की आज्ञा पाकर संत हरिओमलाल ने आश्रम परिसर में राकेश—कृष्णा का विवाह संस्कार सम्पूर्ण विश्व में प्रथम बार श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के चार फेरे गुरु प्रार्थनाष्टक के उच्चारण के साथ लांवा फेरे पूरे कराये। खचाखच भरे सत्संग हाल में ऐसा अनोखा विवाह वो भी संगत व संतों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। जिसे देखकर अनेक प्रेमी यह कह उठे कि आगे से हम अपने परिजनों का विवाह भी इसी रीति से करेंगे।

सायंकालीन सत्संग सभा में पेन्ड्रारोड बिलासपुर की रहने वाली बालिका **प्रीति जैन** ने तीन भजन कोयल जैसी मधुर वाणी में ऐसी सुर ताल व लय से सुनाए मानो साक्षात् सरस्वती माता उसके कण्ठ में विराजमान हो।

आज सायं श्री गुरुदेव भगवान संत मण्डल व प्रेमियों सहित **शधाणी दरबार** पधारे। वहांके महंत संत युधिष्ठिरलालने पूज्यश्री को जीव के कल्याण के लिये अमृत वचन कहने के लिये विनती की। सबसे पहले **प्रीति जैन** ने **तेरी बीती उमरिया हरि नाम बिना** भजन के बाद अन्य संतों ने अमृतकण बिखेरे। अंत में **गुरुदेव भगवान** ने **मुहिंजा सतगुर सांई, दिल मां शल नांव न तुहिंजो विसिरे** कहा कि कलयुग में संसार रूपी भवसागर से तरने का सरलतम साधन है श्रद्धा व प्रेम से निरन्तर नियमपूर्वक नाम का जप करते रहना। इस प्रकार नाम स्मरण का संदेश देकर जलपान उपरांत वापिस आश्रम पर पहुंचे।

आश्रम पर सायंकालीन सत्संग सभा के समापन प्रवचन करते हुए कहा—

तुमसा दयालु जग में, दूजा कहां मिलेगा।
दुख दर्द के मारों के, आंसू को पोंछ लेगा।।
दर छोड़के तुम्हारा, जाएं कहां दुखारी।

जैसे कपड़े की दुकान पर बाहर बोर्ड लगा रहता है कपड़े की दुकान या अन्य कोई संकेत। तो ग्राहक समझ जाता है क इस दुकान पर कपड़ा ही मिलेगा तैसे संसाररूपी दुकान पर भगवान ने बोर्ड लगा दिया है। **दुखालयम् अशाश्वतम्** जिससे समझ में आता है कि संसार दुःखों का घर है, जो आया है सो जायेगा, कोई अपना कोई पराया, कभी हानि तो कभी लाभ! इन सबको द्वन्द कहा गया है इनसे बचने का कोई रास्ता नहीं। हमारा मन अनन्त शान्तिका भंडार है इसको नामरूपी अमृत पिलाकर लोक परलोक के दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है। साथ ही प्रभु को प्रार्थना भी करें कि मेरे मन का स्वरूप बदल जाय। ये ही सतपुरुषों का उपदेश है कि मन को एक ही जगह पर एकाग्र कर दो तो शीघ्र बेड़ा पार हो जायेगा। मनको निश्चल बनाने की युक्ति बतलाकर पल्लव पाकर सत्संग को विराम दिया।

17 जनवरीः आज आश्रम के पञ्चदिवसीय महायज्ञका समापन दिवस है। प्रातःकाल में विद्वान ब्रह्मसमाज द्वारा हवन यज्ञ कराया गया जिसकी पूर्णाहुति गुरुदेव भगवान संत मण्डल द्वारा की गयी। हवन पश्चात् सत्संग सभा में दिल्ली आश्रम के **भक्त केवलराम ने भजन बिना बांवरे, तूने हीरा जन्म गंवाया** के बाद **संत हरिओमलालजी** ने नया भजन गाकर समझाया कि **मात पिता गुरुदेव की बानी, बिना विचार करिए शुभ जानी।**

जीवन सफल बनाए, सिख्या सतगुर जी।

1. मात पिता गुरुदेव जी वाणी, हृदय सांण हंडाए।
2. मिठिड़ी बोली सभसां बोले, सभखे सुख पहुंचाए।
3. अमृतवेले करे सुजागी, गुर जो नाम ध्याये।
4. कूड़ कपट ऐं बुरी संगत खां, हरदम पाण बचाए।
5. सुमति शांति सेवा सत्संग सां, जीवन सफल बणाए।
6. भगवंत भाणे ते रहु राजी, मन खे नित समझाए।
7. हरि हमेशा हली हेठांइ, पूरन पद खे पाइ।।

सत्संग पश्चात् गणेश वंदना व मंत्रोच्चारण के साथ ध्वजावंदन किया गया। ध्वजागीत को सामूहिक रूप से गाते हुए प्रेमियों ने

नाचकर खुशी का इजहार किया। ध्वजावंदन के बाद रखे गये पाठों का पारायण सम्पन्न हुआ। पूज्यश्री ने पल्लव पाकर सारी संगति को हवन ध्वजावंदन भोग साहब की बधाईयां दीं। इसके बाद लगभग सात हजार से अधिक प्रेमियों ने गुरुदेव के पावन भंडारे का भोजन प्रसाद पाया।

सायंकालीन समापन सत्संग सभा में **संत बुधरप्रकाशजी** ने **बलिहारी मां, लखवारी मां, सतगुर जे दीदार तां।**के बाद पूज्य **संत जयदेवजी** ने **साखी थी तूं दिसु संसार, दावो तहिं में रख ना पहिंजो** सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज का वचन है **संसार की इच्छाओं को जलाओ तो आत्म स्वराज्य प्राप्त होगा, जो कभी नष्ट नहीं होता।** उदाहरण के द्वारा समझाया कि दासी राजा के लिये सेजा तैयार करती थी। एक दिन दासी के मनमें आया कि मैं भी इस सेजा पर सोकर देखूं। जैसे ही सोयी, इत्र, अंबीर व फूलों की सुगंध व कोमल शय्या, लेटते ही नींद आ गयी। इतने में राजा आ गया, उसने दासी की पिटाई करवाई तो दासी हंसने लगी। राजा आश्चर्यचकित हो गया। इस पर दासी ने कहा कि मैं कुछ देरके लिये सोयी तो इतनी मार पड़ी जो इस पर रोज सोता होगा उसका क्या हाल होगा।

अंत में वार्षिक महोत्सव का समापन करते हुए **गुरुदेव भगवानने** कहा– हमारे ऋषि मुनियों ने व वेद भगवान ने जो ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास आश्रम की व्यवस्था की। इनमेंसे किसी भी आश्रम में रहकर महापुरुषों का सानिध्य लेकर जो भक्ति करता है उसका बेड़ा पार हो जाता है। तो अब पल्लव का समय है। पल्लव यानी मांगना तो क्या मांगे? सांसारिक पदार्थ तो प्रारब्ध के अनुसार मिलते बिछडते रहेंगे। इसलिये गुरुदेव भगवान से सदैव सुमति सद्‌बुद्धि का दान मांगना चाहिये। इसी के साथ महोत्सव सम्पन्न हुआ।

बेमेतरा 18 जनवरी

रायपुर से प्रातः ७:३० बजे अमरापुर वाहन द्वारा श्री गुरुदेव भगवान, संत मण्डल व अतिथिगण रवाना होकर बेमेतरा पहुंचे। जहां प्रेमी श्री जमनादास ने नगरवासीयों व प्रेमियों के साथ मिलकर बैंडबाजों व आतिशबाजी करके महाराजश्री का जोरदार स्वागत किया।

सायंकालीन सत्संग सभा का आयोजन सिन्धी धर्मशाला में किया गया था। जहां **संत जयदेवजी** ने **मैं सतगुरु पै बलिहारी रे, जिंह अविद्या मन की टारी रे** हमारे भाग्य भले हुए जो अनन्त जन्मोंके पुण्यों के फलस्वरूप सद्‌गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज की प्राप्ति हुई। जिन्होंने विषय भोगों रूपी दलदल से निकालकर गफलत, आलस्य व अविद्या को दूर करके प्रभु के ध्यान में ऐसा तो मग्न कर दिया जैसे गोपियां श्रीकृष्ण भगवान के ध्यान मे मग्न हो गयी थीं। '**उद्धव, श्याम ही हमारो मन, श्याम ही हमारो तन, आठों पहर हमें श्याम ही से काम है।**' **पूज्यश्री** ने इस क्षणभंगुर जीवन में एक ही लक्ष्य बनाकर उस मञ्जिल को प्राप्त करने के लिये प्रार्थना व पुरुषार्थ करने पर जोर दिया।

क्षण भंगुर जीवन की कलिका, कल होत प्रभात खिली न खिली।
मलियाचल की शुद्ध शीतल मंद, सुगन्ध समीर चली न चली।
कलिकाल कुठार लिए फिरता, तन नम्र से चोट मिली न मिली।
जप ले हरि नाम अरी रसना, फिर अन्त समय में हिली न हिली।

जितने भी साधन हम अपनाते हैं उनका उद्देश्य यही है कि अन्त समय में रामनाम ध्यान में आ जाए क्योंकि जीवन भर जो संसार का व्यवहार चलता है वही बातें अन्तकाल में याद आती हैं। **जनम जनम मुनि यतन कराहीं, अंत राम कह आवत नाहीं।** इसलिये सदैव गुरुदेवसे यही प्रार्थना करनी चाहिये कि हे गुरुदेव! मेरा मनरूपी भंवर आपके कमलरूपी चरणो मे सदैव वास करता रहे। अंत तक नाम के साथ प्रीति जुड़ी रहे। ऐसी शुभकामना के साथ पल्लव पाकर अमृतवाणी को विराम दिया।

भाटापारा 19 से 21 जनवरी

माता समझबाई का वार्षिक स्मृति महोत्सव

बेमेतरा से प्रातः ७ बजे भाटापारा आश्रम पर माता समझबाई वार्षिक वर्सी महोत्सव की अध्यक्षता के लिये पूज्यश्री संत मण्डल सहित भाटापारा पहुंचे। डॉ. ठाकुर, श्री घुम्मणमल, लक्ष्मणदास, दादी मोहिनीदेवी, करतारलाल ने प्रेम प्रकाश सेवा मण्डली व नगरवासियों के साथ महाराजश्री का जोरदार स्वागत बैंडबाजों के साथ किया। इस अवसर पर महाराजजी के सम्मान में स्वागत शोभायात्रा निकाली गयी, पूज्य गुरुदेव भगवान एक खुली सजी हुई जीप में संतों के साथ नगरनिवासियों को संत दर्शन से कृतार्थ करते हुए विराजमान थे। मार्ग में अनेक स्थानों पर स्वागत द्वार व पुष्पवर्षा की जा रही थी। प्रेमियों का उल्लास तो देखते ही बन रहा था। गुरुदेव का सानिध्य पाकर सभी के चेहरे खुशी से दमक रहे थे। नाचते झूमते भजन गाते माता देवालयपारा स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पहुंचे। दो दिन पूर्व इस महोत्सव का शुभारम्भ पूज्यश्री की आज्ञा से संत [illegible]जी द्वारा पञ्चदिवसीय पाठारम्भ व सत्संग वर्षा करके किया गया।

श्री मुरलीधरजी ने सद्‌गुरु महाराजजी संत मण्डल अतिथियों का स्वागत पुष्पमालाएं पहिनाकर शेरोशायरी बोलकर अभिनन्दन किया। त्रिदिवसीय संत समागम में दिव्य सत्संग ज्ञान यज्ञ समारोह में पूज्य गुरुदेव भगवान संत महापुरुषों विद्वानों कवियों ने प्रभु व गुरुदेव का गुणानुवाद करते हुए लोगों को सतमार्ग की ओर प्रेरित किया।

दिल्ली से आये **संत केवलरामजी** ने **'तारो प्रभु चाहे मारो, नैया तेरे हवाले'** **संत दयाप्रकाशजी** ने **'सचा सतगुर सची भक्ति दया धारे दियो मूंखे'** इन्दौर से आए हुए **संत नरेशलाल** ने माता समझबाई के उपदेश की याद कराई—

समझ समझ के समझ को समझो, समझ समझना ही एक समझ है। समझ समझ के भी जो ना समझे, मेरी समझ में वो ना समझ है। **संत प्रतापलाल** मुरेना वालों ने एक रोचक सत्य प्रसङ्ग सुनाते हुए कहा— एक बार किसी प्रेमी ने आचार्यश्री से कहा कि सांई आपका नाम टेऊँ नहीं त्रिलोकीनाथ होना चाहिये था। तब उन्होंने फरमाया—

अस्ति भाति प्रियरूप में नामरूप जंजाल।
लख तंह आत्मरूप निज होय तत्काल निहाल।।

देही को मैं मानना सबसे बड़ा पाप है, सब पाप इसके पुत्र हैं, सब पापों का ये बाप है। मैं ब्रह्म हूं मैं ब्रह्म हूं ये ही अजपा जाप है, सब पाप इसके पुत्र हैं, सब पापों का ये बाप है।

संत हरीओमलाल ग्वालियर आश्रम वालों ने **'करे सदगुर रखी श्रद्धा सचौ सौदो वठण घुरिजे'** **'अगर आराम की तमन्ना तो एक काम कर, आ राम की शरण में ये नेक काम कर'** गुरु की शरण में आकर नामरूपी सच्चा सौदा लेकर जन्म—जन्मांतर से थके हुए मन को गुरु की गोद में विश्राम देने से ही शान्ति मिलेगी।

स्वामी जयदेवजी महाराज ने **'उथी मन जागु-2, खुल्यो थई भागु-2, राम खे संभार तूं'** **'राम भया सतगुर दया, साधु संग जब होय। तब प्राणी जाने कछु, रह्यो विषय रस मोय।'** तीन कृपाएं इस जीव पर हो चुकी हैं, अब चौथी कृपा इसे अपने आप पर स्वयं करनी है तो तीनों कृपाओं का लाभ उसे मिलेगा और उसका मानव जीवन सफल हो जायगा।

अंत में **पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज** ने अपनी ओजस्वी मृदुल वाणी में अमृतरस पिलाते हुए कहा—

प्रीतम छवि नैनन बसी, दूजी कहां समाय।
भरी सराय देखके, आप पथिक फिर जाय।।

धर्मशाला अगर भरी हुई होगी तो पथिक आकर वापिस चला जायगा। हृदयरूपी कोठी बहुत छोटी है इसको संसारी फुरनों की जगह नाम स्मरण से भर दो क्योंकि एक बार संसारी ख्यालों को भर दिया तो भरना आसान मगर खाली करने में बहुत जन्म लग जाते हैं, मनरूपी कोठी को खाली करने के लिए ही सत्संग है। राजा जनक से गुरु ने सब कुछ दान करवाकर कहा अब फिर से वही राज संभालो, मगर अब ये राज मेरा है, पहले तुम मालिक बनकर संभालते थे, अब सेवाधारी बनकर संभालो तो वहीं कार्यकलाप पहले भी व वही कार्यकलाप अब भी, सिर्फ मनकी स्थिति बदल गयी। आत्मज्ञान की प्राप्ति का फल ये ही है कि जो स्थिति एक बार मिल गयी, उसको कोई हिला नहीं सकता। इस प्रकार भाटापारा में आतमज्ञान की गंगा बहाकर पाठों के भोग साहब, हवन, ध्वजावंदन, आम भण्डारे के साथ १९ जनवरी को सांयकालीन सत्संग सभा को पूर्णाहुति देकर पल्लव पाकर माता समझबाई वर्सी उत्सव को सम्पन्न किया।

कोरबा 22 से 23 जनवरी

भाटापारा से प्रातः ७ बजे प्रेमियों से विदा लेकर लगभग १० बजे **चकरभाटा** ग्राम में पहुंचे, जहां लगभग १०० से भी अधिक प्रेमियों ने महाराजश्री संत मण्डली का स्वागत सत्कार पुष्पवर्षा जलपान कराके किया। साथ ही वहां के पंचो ने महाराजश्री से आगामी छतीसगढ़ यात्रा में चकरभाटा में भी अमृत बरसाने की प्रार्थना की। दोपहर को कोरबा पहुंचने पर स्वागत सत्कार की औपचारिकता के बाद पूज्यश्री व संत मण्डल ने भोजन—प्रसादी पाकर विश्राम किया।

सांयकालीन सत्संग सभा में दिल्ली से आयी **महिला मण्डली** ने संगत को भजनानन्द कराते हुए भजन गाया— **ओ टेऊँराम बाबा, ओ अमरापुर के राजा, तेरी अमरापुर में आऊं ,तेरा सुंदर दर्शन पाऊं, तेरे रसीले गीत गाऊं।** काशी से पधारे **संत महादेव व अशोककुमारजी** ने **सुठो राम, सुठो श्याम, पर सभखां सुठो..... सुठो त दाढो आहे वैकुंठ प्यारो ,सुठो त आहे दाढो स्वर्ग जो नजारो, सुठो गोकुल जो गाम, सुठो कैलाश जो धाम, पर सभ खां सुठो मुहिंजो अमरापुर धाम...।** **संत राजेशलाल** (जयपुर) ने **गुरु आऊं आहियां, तुहिंजे सहारे** भजन गाया। अंत में सद्‌गुरु महाराजजी ने मन को खेत की संज्ञा देते हुए कहा— **कल्पवृक्ष के बीज को, गुरु बोयो उर माहिं। श्रद्धा जल सींचे बिना, उग सकत नाहिं।।** गुरुदेव ने हमारे मनरूपी खेतमें कल्पवृक्ष के बीज को बो

दिया है। कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर जिस पदार्थ की इच्छा करते हैं, तुरत पूरी हो जाती है। तो उस बीज को फलीभूत करने के लिए उसमें प्रेम व श्रद्धारूपी जल से सींचकर उसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि कामादिक विकारोंरूपी पक्षियों से बचाना पड़ेगा, नहीं तो हरा भरा वृक्ष नष्ट हो जायगा। गुरुकृपा व पुरुषार्थ का मार्ग बताकर कोरबा के दो दिवसीय सत्संग समारोह का पल्लव पाकर समापन किया।

बिलासपुर 24 जनवरी

कोरबा से रवाना होकर बिलासपुर पहुंचे, यहां पर ओंकारलाल के निवास पर सत्संग का कार्यक्रम रखा गया था। जिसमें **संत झामनदास** (शिवनी) ने '**गुरु महाराज आयो आ, शाहन जो शाह आयो आ, असांजो बाबो त मिलाए थो राम सां**' **संत बुधरप्रकाश** ने '**गुरु घर में आया, भला भाग भाया**' बड़े ही सुर ताल व लय के साथ गाया। अंत में **पूज्यश्री** ने राजा भृतहरि मुनि के जीवन को दृष्टान्त के द्वारा समझाया कि राजा भृतहरि ने सोचा कि जैसे जैसे शरीर वृद्ध होगा, तैसे तैसे तृष्णाएं व वासनाएं भी क्षीण होती चली जायंगी, मगर ऐसा हुआ नहीं। शरीर वृद्ध हो गया मगर तृष्णाएं बलवान बनी रहीं, जैसे आग में जितनी लकड़ी डालेंगे उतनी ही बढ़ेगी, जितनी इच्छाएं पूरी होंगी उससे ज्यादा नई बनती जायंगी। इसलिए सद्गुरु की शरण में रहकर एकान्त में गुरु शब्द का अभ्यास करके मन की प्रीति को गुरुचरणों से जोड़ देंगे तो ही मन को परम शान्ति की प्राप्ति होगी। इसीके साथ पल्लव पाकर बिलासपुरके सत्संग ज्ञानयज्ञ को पूर्ण किया।

रायगढ़ 25 जनवरी

प्रातः ६:३० बजे बिलासपुर से अमरापुर वाहन द्वारा चलकर रास्ते में **चाम्पा** के प्रेमियों को दर्शनलाभ देकर, सद्गुरु महाराजजी संत मण्डली सहित दोपहर ११:३० बजे रायगढ पहुंचे। यहां पूज्य मुखी साहब ने पंचों के साथ महाराजश्री की अगवानी पुष्पहार पहिनाकर की, साथ ही महाराजजी के स्वागत में बज रही बैंड की मधुर धुनों पर प्रेमी झूमते नजर आए।

पंचों के विशेष आग्रह पर हेमू कालानी चौक पर स्वामीजी ने शहीद हेमू कालानी की प्रतिमा को माला पहनाई। इसके बाद सद्गुरु महाराज व संत मण्डल अतिथियों को महिला सत्संग भवन (सिन्धी गुरुद्वारा) लाया गया। ज्ञातव्य रहे कि यहां पर आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज, सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज, सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की लघु संगमरमर की प्रतिमाएं विराजमान हैं। यहां पर प्रथम बार सद्गुरु महाराज के पधारने के उपलक्ष में श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का पाठ रखा गया है।

सत्संग सभा की शुरूआत **संत नरेशलाल** ने प्रार्थना गायन के साथ की। **संत लक्ष्मणलाल** ने ग्रंथ साहब के पाठ का भोग डाला। इससे पूर्व **सद्गुरु महाराज** ने संगत को सदुपदेश देते हुए कहा– बड़े भाग्य से मानुष तन पाया है, इसमें भी संतों का संग मिला है तो सत्संग के द्वारा मन के विकारों को पवित्र करते हुए सुमति का दान मांग कर मनुष्य चोले को उज्जवल बनाए।

उद्घाटन समारोहः मारबल के पत्थर पर अङ्कित था– 'पूज्य सिन्धी पंचायत धर्मशाला के नवीनीकरण के प्रथम चरण का उद्घाटन श्री प्रेमप्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा किया गया। २५ जनवरी २००६' धर्मशाला परिसर में बने शिवालय पर माल्यार्पण किया। इस शिवालय का शिलान्यास सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज ने जनवरी १९९० में किया था।

बरगढ़ 26 से 27 जनवरी

२६ जनवरी को प्रातः ६:३० बजे श्री गुरुमुखदासजी के घर से रवाना होकर प्रातः ९ बजे '**बरमकेला**' गाव में कुछ देर रुककर प्रेमियों को सत्संग दर्शन सेवा का लाभ देकर अल्पाहार का प्रसाद पाकर ११ बजे बरगढ़ पहुंचे। जहां पर कई प्रेमी मोटर साइकिलों के द्वारा नगर प्रवेश द्वार पर ही महाराजश्री की अगवानी हेतु उपस्थिति थे। श्री हरीराम, प्रेमचंद, होतचंद, नारायणदास, टीकमदास आसूदानी के परिवार ने पूज्यश्री का आत्मीय स्वागत किया। आतिशबाजी चलाते हुए खुशीयों में मस्त प्रेमीयों का गुरुदेव व संतों के प्रति प्रेमभाव देखते ही बनता था। आज भारतीय गणतंत्र का ५७ वां वार्षिकोत्सव भी सम्पूर्ण देश में मनाया जा रहा है। यह दिन प्राप्त करने के लिये कितना परिश्रम, कितना त्याग, कितनी कुर्बानियां देनी पड़ीं थीं, यह सबको मालूम ही है। सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज से लेकर सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज तक यही परम्परा चली आ रही है कि इस शरीररूपी देश पर जो मनरूपी राजा बैठा है, उसको बाहरी ताकतों जैसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि ने अपना गुलाम बना रखा है, उन्हे आजाद कराने के लिये गुरु का आशीर्वाद लेकर सत्संग के सहयोगसे नामरूपी संघर्ष के द्वारा मन को विकारों के बन्धन से मुक्त कराया जाता है। यह बात **संत नरेशलाल** ने अपने प्रवचन के माध्यम से संगत को बतायी। अंत में कृपा के सागर **सद्गुरुदेव** ने कृपारूपी अमृत बरसाना शुरू कर दिया–

गुरुदेव कृपा बरसाओ, अब और न देर लगाओ।

गुरुदेव की सबसे बड़ी कृपा है इस जीव को अपने आत्म–स्वरूप का ज्ञान हो जाए। क्योंकि मनुष्य शरीर साधारण शरीर नहीं है, यह प्रभु परमात्मा से मिलने का उत्तम साधन है। इस शरीरको पानेके लिए तैंतीस करोड़ देवता भी तरसते हैं। क्योंकि इस शरीर में अनन्त शक्तियां सुप्त रूप में विराजमान हैं, जिन्हें गुरुदेव की कृपा व स्वयं के पुरुषार्थ से जाग्रत किया जा सकता है। जिसके द्वारा आत्माका साक्षात्कार करके आवागमन को मिटाना सरल हो जाता है। ज्ञानरूपी कृपा बरसाते हुए पल्लव पाकर सायंकालीन सत्संग सभा का समापन किया।

२७ जनवरी को प्रातः ९ बजे हवन–यज्ञ, ध्वजावंदन कार्यक्रमों के बाद सत्संग सभा की शुरूआत हुई। **पं. मनोरंजन चक्रवर्ती** (डफली वाले बाबा) ने **'सतगुर दे दे तेरी चरण इक बार, ये दुखिया भक्त आया तेरे द्वार'**, जयपुर से आये **श्री किशनचंदजी** ने **'सत्संग में सब आने वाले, मन को तुम समझाना, भूल न जाना, सद्गुरु देंगे नाम खजाना, उसको तुम ले जाना, भूल न जाना।'** **संत हरीओमलालजी** ने **'यही जपन की वेरा, श्रीराम जपो मन मेरा'** के माध्यम से समझाया कि हमारे सद्गुरु स्वामी सर्वानन्दजी महाराज अक्सर इस भजन को गाया करते थे। वे कहते थे कि हरएक जीव हरएक मनुष्य अपने आप को स्वयं समझावे कि राम जपने की यही वेला है। मनुष्य चोला ही मोक्ष का द्वार है। तत्पश्चात् शास्त्रों के मर्मज्ञ **श्री गुरुदेव भगवान** ने मनुष्य शरीर की महिमा करते हुए कहा–

पशु तन की पन्हैया बने, नर का कुछ नहीं होय।
नर से नारायण बने, कै बन जाने कोय।।

इस श्लोक में नर तन की निरर्थकता व सार्थकता दोनों का ज्ञान कराया गया हैं जो मानव गुरु द्वारा प्रदत्त शब्द का वीचार नहीं करता उससे तो पशु अच्छे हैं, क्योंकि पशु मरे दस काज संवारे, मगर नर तन जलकर राख हो जाता है। और महापुरुष हमें समझाते हैं कि नर ते नारायण बने, जो नर निशवासर अजपा जाप का जप करता है। सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज कहते हैं कि **'कह टेऊँ रट राम को, भए राम के रूप'** इस प्रकार परम लक्ष्य तक पहुंचानेका मार्ग बताकर पल्लव पाकर अपनी वाणी को विराम दिया।

सायंकालीन सत्संग सभा में आसूदानी परिवार ने मर्यादा पुरुषोत्तम श्री गुरुदेव भगवानके शुभागमनके उपलक्षमें १०८ दीपक प्रज्जवलित कर एक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया– **मधुबन में जो कन्हैया, किसी गोपी से मिले कभी मुस्काए कभी छेड़े, कभी बातें करे, राधा कैसे न जले–2** गीत पर दस बालिकाओं ने मनमोहक नृत्य किया। **वो कृष्णा है, जो है अलबेला, मद नैनों वाला, जिसकी दीवानी, ब्रज की हर बाला, वो कृष्ण है।** इस गायन पर नन्हीं बालिकाओं का नृत्य वास्तव में सराहनीय था। कु. पिंकी के निर्देशन में उपरोक्त कार्यक्रम की सशक्त प्रस्तुति से प्रसन्न गुरुदेव ने सभी बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए उपहार दिए।

सभा के अंत में **ब्रह्मस्वरूप गुरुदेव** ने शरणागति की महिमा के बारे में समझाया–

सद्गुरु बुद्धि के नैन में डारे अंजन ज्ञान।
कह टेऊँ तम भ्रम हर दिखलावे भगवान।।
गुरुदेव ब्रह्मस्वरूप हो, दो प्रकाश तुम रवि रूप हो,
तेरी इक किरण मिल जाय, तो हो दूर सब अज्ञान तम
शरणागतम् शरणागतम्।
अज्ञानतिमिरन्धस्य् ज्ञानाजन शलाकया।
चक्षुरुमीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मनेष्ठी व ब्रह्मश्रोत्रिय गुरुदेव शरण में आये शिष्यके बुद्धिरूपी नेत्रों में ज्ञानरूपी अञ्जन डालकर उन्हें भगवान का दर्शन कराते हैं ,ऐसे गुरुवर स्वामी टेऊँरामजी महाराज के चरणों में हम प्रणाम करते हैं क्योंकि उन्होंने हमें ज्ञान कराया कि हमारे भीतर शान्तिका अनन्त व अक्षय भंडार है, जिसके द्वारा सर्व दुःखों की निवृत्ति व परमानन्द की प्राप्ति हो सकती है।

अनन्त ज्ञान के भंडार गुरुदेव ने ज्ञान वरखा करके पल्लव पाकर इस ब्रह्मयज्ञ का समापन किया।

धमतरी 28 से 30 जनवरी

श्री अमरापुर वाहन व अन्य वाहनों द्वारा प्रातः ७ बजे धमतरी के लिये गुरुदेव मण्डली का प्रस्थान हुआ। मार्ग में **रायपुर** शहर में माता रीटादेवी के नवीन निवास पर सद्गुरु महाराजजी की लघु प्रतिमाओंकी स्थापना गुरुदेव के करकमलों से की गयी।

दोपहर ३ बजे धमतरी पहुंचने पर संत हरीशलाल, गुरुमुखदास, अशोक कुमार के साथ सैकड़ों की संख्या में प्रेमियों ने पटाखों की धूम के साथ पुष्पवर्षा करते हुए महाराजश्री का शानदार स्वागत किया।

आश्रम के वार्षिकोत्सव के निमित्त पञ्चदिवसीय पाठों का आरंभ २६ जनवरी को किया गया था। पूज्य गुरुदेव भगवानके सानिध्य में त्रिदिवसीय सत्संग ज्ञान यज्ञ में पूज्यश्री व संतों के श्रीमुख से प्रवाहित अमृत–

दिल्ली से पधारे **संत लालूरामजी** ने **'सतगुर तें रख विश्वास, सतगुरु तुहिंजा कारज संवारे'** **संत दयाप्रकाशजी** ने **'मनड़ा मुहिंजा गफलत में न गुजार तूं'** के बाद **संत हरीओमलालजी** ने **'भली दुनियां जी कर कारि तूं, पर साईअ खे न विसारि तूं'**

भजन के माध्यम से समझाया कि प्रभु ने जो दुर्लभ देही दी है उसमें संसार के कार्यों के साथ–साथ भजन कीर्तन व सुमिरन करके मानव जीवन को सफल बनाना है।

अंत में **श्री गुरुदेव** ने ईश्वर व जीव के परस्पर सम्बन्ध को उजागर करते हुए बताया– जैसे समुद्र में से पानी की एक बूंद अलग होकर बाहर आ जाए तो धूप लगने पर वह सूख जाएगी। थी तो समुद्र, परन्तु बाहर आने पर बूंद कहलाई, यदि वह वापस जाकर समुद्र में मिल जाए तो फिर बूंद नहीं कहलाएगी। ठीक उसी प्रकार यह जीव भी ईश्वर से अलग होकर उसका अंश कहलाया **'ईश्वर अंश जीव अविनाशी'** मगर परमपिता परमात्मा का ध्यान करने व उसका नाम रटने व अपने स्वरूप को जानने के बाद वह फिर उसका रूप बन जाता है **'कह टेऊँ रट राम को, भए राम के रूप।'** तो गुरुदेव की कृपा से जप के द्वारा अपना कल्याण करने की कोशिश करेंगे। **'जपेसिद्धि जपेसिद्धि, जपेसिद्धि न अन्यथा।**

अन्तिम दिन प्रातः हवन, ध्वजावंदन व पाठों के भोग व आम भंडारे का आयोजन भी हुआ, जिसमें हजारों की संख्या में धमतरी व समीपस्थ क्षेत्रों से आए हुए भक्तों ने भाग लिया।

कांकेर, भानुप्रतापपुर व दल्ली राजहरा 31 जनवरी

धमतरी आश्रम पर प्रातःकालीन प्रार्थना गायन के बाद रवाना होकर प्रातः ८:३० बजे कांकेर में श्री चौइथराम सबनानी के निवास पर सत्संग भजन करके अल्पाहार लेकर दोपहर ११ बजे भानुप्रतापपुर पहुंचे। जहां श्री आनन्दराम के साथ सैकड़ों प्रेमियों ने पटाखे जलाकर खुशी का इजहार किया। कुछ प्रेमी भक्तों के निवास पर चरण पखारते हुए आनन्दराम के निवास पर लगे पंडाल में सत्संग कार्यक्रम रखा गया था, पहुंचे। सत्संग सभा को **पूज्यश्री** ने अपने अमृत से सींचते हुए कहा–

के शत्रवः सन्ति निजेन्द्रियाणि तान्येव मित्राणि जितानि यानि।

जब आदि गुरु शंकराचार्यजी से पूछा गया कि हमारे शत्रु कौन हैं? तो उन्होंने कहा कि हमारी इन्द्रियां ही हमारी शत्रु हैं। जब उनसे पूछा गया कि हमारे मित्र कौन हैं? तो उन्होंने कहा कि हमारी इन्द्रियां ही हमारी मित्र है।

अगर मन को विषय चिन्तन में लगाएंगे तो मन हमारा शत्रु बन जायेगा, हमको चौरासी के चक्र में ले जायेगा और अगर इसी मन के द्वारा ईशभक्ति करेंगे तो यही मन हमारा मित्र बन जायगा। कबीर साहिब भी फरमाते हैं **'कबीर मनवा एक है, भावे जहां लगाय, भावे हरि की भक्ति कर भावे विषय कमाय'** सद्गुरु स्वामी टेऊँरामजी महाराज जी ने भी अपने मन को संसार से अलग करके नाम के साथ जोड़ दिया तो उनको परमपद की प्राप्ति हो गयी।

प्रेमियों को मन जीतने का साधन बताकर पल्लव पाकर भोजन प्रसादी के बाद वहीं पर विश्राम किया। सायं नाम के प्यासे प्रेमियों को अमृत की बूंद पिलाकर दल्ली राजहरा के लिये प्रस्थान हुआ

सायं ४ बजे *दल्ली राजहरा* पहुंचे, जहां श्री आवतरायजी ने प्रेमियों के साथ श्री गुरुदेव संत मण्डली का बड़े प्रेम से स्वागत किया। सत्संग का कार्यक्रम सिन्धु सांस्कृतिक भवन (सिन्धी धर्मशाला) में रखा गया था। सत्संग सभा में अमृतवर्षा करते हुए **संत हरीओमलालजी** ने बताया कि **'सतगुरु तीर्थ रूप है, वचन सुनिर्मल नीर, टेऊँ तामें नायके, पावन करो शरीर'** संतों का दर्शन किसी भाग्यवानको ही प्राप्त होता है तो हम भी अपने मन को उनके वचनोंरूपी गंगा में डुबकी लगाकर पवित्र बनाएं।

तत्पश्चात् **गुरुदेव भगवान** ने संसार की नश्वरता का ज्ञान कराते हुए फरमाया कि सांसारिक पदार्थ अच्छे जीवनयापन के लिये है मगर उनसे मन की शान्ति मिलने वाली नहीं। मनकी शांति के लिये संतों गुरुदेव के पास जाकर मन का समर्पण करेंगे तो उनके द्वारा बतायी गयी युक्ति से हमें शाश्वत शान्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसीके साथ दल्ली राजहरा में सत्संग ज्ञान यज्ञ का समापन पल्लव पाकर किया।

आश्रमों मण्डलियों के लिये अति आवश्यक सूचना

सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का जन्म शताब्दी वर्ष जो ९ अगस्त २००६ बुधवार से २८ अगस्त २००७ मंगलवार तक मनाया जायगा। जन्मशती वर्ष का प्रारम्भ प्रेमप्रकाशीयों के हृदय स्थल परमपावन गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान में मुख्य समारोह के आयोजन से होगा।

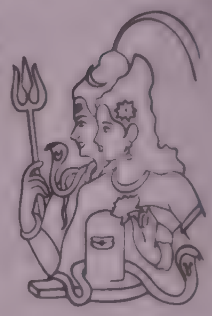
इस वर्षमें श्री प्रेम प्रकाश मण्डल ट्रस्ट की ओर से पूरे विश्व में जनकल्याणकारी कार्यों को प्रमुखता से किया जायगा। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए आपने भी अपने यहां मनाये जाने वाले सद्गुरु शान्तिप्रकाश जन्मशती समारोह के बारे में बैठक कर कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार कर ली होगी। कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाकर उसकी कम्प्यूटराईजड कॉपी श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान, एम. आई. रोड, जयपुर में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के नाम से १५ मार्च तक डाक से भिजवायें। इसकी एक प्रति प्रेम प्रकाश संदेश के ग्वालियर कार्यालय को भी आवश्यक रूप से भिजवायें।

लघुकाशी गुलाबी नगरी जयपुर के पावन तीर्थ



श्री अमरापुर धाम में

महाशिवरात्रि महोत्सव



रविवार 26 फरवरी 2006

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 11 बजे तक प्रार्थना–सत्संग, प्रवचन कैसेट
हवन (यज्ञ) 10 से 11 बजे तक अमरापुरेश्वर मन्दिर में
ध्वजा–वन्दन, पूजा–अर्चना–आरती एवं विशाल भण्डारा (महाप्रसादी)

होली महोत्सव बुधवार 15 मार्च 2006

कार्यक्रम

प्रातः 7 से 10 बजे तक प्रार्थना सन्तों द्वारा होली
पर्व की महिमा सत्संग गुरु महाराज की प्रवचन कैसेट
प्रतिमाओं का पूजन व होली मिलन एवं प्रसादी वितरण

श्री अमरापुर धाम में मनाया गया बसन्तोत्सव

पावन गुलाबी नगरी जयपुर का पुनीत हृदयस्थल श्री अमरापुर स्थान में बसंतोत्सव बड़े ही उल्लासपूर्वक वातावरण में मनाया गया। प्रातःकालीन सामूहिक प्रार्थना, संतो–महापुरुषों का सत्संग, सांई सर्वानन्द जी महाराज की अमृतमयी वाणी का कैसिट के माध्यम से श्रवण, गुरु प्रतिमाओं का विशेष पूजन, आरती व प्रसादी वितरण कर बसंतपञ्चमी महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर गुरु प्रतिमाओं का पीत वस्त्रालङ्कार किया गया, साथ ही पूरे मंदिर परिसर का पीले पुष्पों से शृङ्गार प्रेमियों को मंत्रमुग्ध करने वाला था।

माँ सरस्वती देवी व गुरु प्रतिमाओं का पूजन

श्री अमरापुर धाम जयपुर में २ फरवरी बसन्तपञ्चमी पर विद्या की देवी माँ सरस्वती देवी व गुरु महाराज की प्रतिमाओं का कुगूं, केसर, रंग, गुलाल से पूजा अर्चना वन्दना की गयी।

मनमोहक शृङ्गार कर माँ शारदा देवी को पीले पुष्पों से सजाया गया। इसीके साथ संतों प्रेमियों व विद्यार्थी समुदाय ने वन्दना –आराधना करके माँ से विद्यादान करने की प्रार्थना की।

अमरापुर में बसंतपञ्चमी पर किया ५२ भक्तों ने रक्तदान

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में २ फरवरी २००६ गुरुवार को बसन्तपञ्चमी के पावन अवसर पर स्वैच्छिक रक्तदान शिविर लगाया गया। एस. एम. हॉस्पिटल ब्लड बैंक व श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर में ५२ भक्तों ने अपनी इच्छा से रक्तदान करके पुण्य अर्जित किया। इसी प्रकार श्री अमरापुर स्थान में वर्ष में ३ बार रक्तदान शिविर, एक विशाल निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर व चिकित्सा व सर्जीकल शिविर का आयोजन किया जाता है।

बसंत पञ्चमी पर ब्यावर आश्रम पर रक्तदान करने वालों की भीड़

ब्यावर–प्रेम प्रकाश आश्रम पर २ फरवरी को बसन्त पञ्चमी के पावन पर्व को पीत शृङ्गारित मंदिर परिसर में संत भोलाराम के सानिध्य में उल्लासपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम बार रक्तदान शिविर लगाया गया। शिविर में प्रेमियों का हजूम उमड़ पड़ा। लक्ष्य के अनुरूप ४० प्रेमियों ने रक्तदान किया, इतने ही और प्रेमी तैयार थे रक्तदान करने को। उनको अगले शिविर में रक्तदान करने को कहा गया। शिविर का उद्घाटन ब्यावर नगरके उप जिलाधीश श्री राजेश चौहान द्वारा किया गया। नानकराम रंगवाला ब्यावर से

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-24

प्र.१ प्रेम प्रकाश मण्डल का मुख्य मेला कौन सा है और इस पर्व को कहाँ और कब मनाया जा रहा है?

उ. ....

प्र.२ विशाल नि:शुल्क नेत्र चिकित्सक शिविर कब और कहाँ लगाया जा रहा है ?

उ. ....

प्र.३ आचार्यश्री का अमोघ महामंत्र कौन सा है ?

उ. ....

प्र.४ बसन्त पंचमी पर किस देवी माँ की पूजा अर्चना की जाती है ?

उ. ....

प्र.५ गौशाला, प्रदर्शनी स्थल, समाधिस्थल, गुरुमुखद्वार, महादेव मन्दिर व लक्ष्मी नारायण मन्दिर आदि ये पवित्र दर्शनीय स्थल कहाँ बने हुये है ?

उ. ....

प्र.६ सात तारों के समूह को क्या कहते हैं ? (जनवरी अंक की वर्ग पहेली को ध्यान से पढ़ें)

उ. ....

प्र.७ जैसे पय में घृत है.................सद्गुरु टेऊँराम दोहावली को पूरा करो ?

उ. ....

प्र.८ हर प्रेम प्रकाशी भक्त का क्या कर्तव्य है गुरु भक्त को कौन से कार्य करने चाहिए ? (जनवरी अंक के पृष्ठ ७ को ध्यान से पढ़ें)

उ. ....

प्र.९ सद्गुरु जिज्ञासुओं को कौन सा उपदेश देते हैं (जनवरी मुख्य पृष्ठ के आधार पर)

उ. ....

प्र.१० गुरु कितने प्रकार के होते हैं नाम साहित लिखो ? (जनवरी मुख्य पृष्ठ को पढ़ें)

उ. ....

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-23 के सही उत्तर (१) ॐ श्री सत्नाम साक्षी (२) ईश्वर का अंश (३) दहेज लेना घोर महापाप (४) वार्षिक--५, चौथ--१३, शनिवार--५२ (5+13+52=70) कुल ७० बार मनाया जायेगा। (५) टेऊँ दीपक ज्ञान बिन, शोभत धाम न देह। गुरु बिन ज्ञान न होत है, तांते गुरु कर लेह।।(६) साक्षी चेतन रम रहा, जल थल पुनि आकार। कह टेऊँ तिंह जानके, पाओ सुख अविनास।। (७) "चार आने" मेहतरानी मांग रही थी। (८) मद्रास के समीप पुदुकूपम नया गाँव में स्वामी टेऊँराम स्कूल। (९) सद्गुरु स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज का (१०) १३ सांई टेऊँराम चौथ तिथि (पर्व २००६) को मनाई जायेगी।

श्री अमरापुर स्थान पर विशाल नि:शुल्क नेत्र शिविर १९ फरवरी को

परम पावन गुरुधाम श्री अमरापुर स्थान जयपुर में श्री अमरापुर जन कल्याण चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा जिला अंधत्व निवारण समिति के सहयोग से एक विशाल नि:शुल्क नेत्र शिविर का आयोजन १९ फरवरी २००६ रविवार को किया गया है। इस शिविर में मोतियाबिन्द, कालापानी, फूला व नासूर जैसे नेत्ररोगों की चिकित्सा एवम् आपरेशन कर मोतियाबिन्द के रोगियों को लैंस लगाये जायेंगे। शिविर में डॉ. रमेश वाधवानी, डॉ. एम. एम. बंसल, डॉ. विश्वास गुप्ता, डॉ. बेला मोहन तिवाड़ी, डॉ. सीमा श्रीवास्तव नेत्ररोगियों की जांच व आपरेशन करेगें। शिविर में आवास भोजन चिकित्सा आपरेशन दवाईयां सभी सुविधाएं नि:शुल्क रखी गयी हैं।

आध्यात्मिक वर्गपहेली-27

1	2		3		4	5	6
7		ॐ		ॐ	8		
	ॐ	ॐ	9	10		ॐ	
ॐ	11				ॐ	12	
13		ॐ		ॐ	14		
15				ॐ		ॐ	ॐ
ॐ		ॐ	ॐ	16		ॐ	17
18				ॐ	19		

आध्यात्मिक वर्गपहेली-२६ के सही हल

1 शा	न्ति	2 प्र	का	3 श	ॐ	4 स	प्त
श्व	ॐ	ल	ॐ	5 ब	च	त्	ॐ
6 त	7 न	य	ॐ	री	ॐ	8 चि	न्ता
ॐ	र्क	ॐ	9 न	ॐ	10 दू	त	ॐ
ॐ	ॐ	11 प्र	क	ट	ॐ	12 आ	त्मा
13 पं	च	व	टी	ॐ	14 पा	न	ॐ
चां	ॐ	च	ॐ	ॐ	15 व	न्द	16 ना
17 ग	जा	न	न	ॐ	क	ॐ	भि

प्रस्तुति : सुधा जौहरी, तिलक नगर, जयपुर

बाएँ से दाएँ :

१. पूज्यपाद सद्गुरु जो प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष हैं (२.६)
७. चित्त एकाग्र करके प्रभु स्मरण. (२)
८. भगवान विष्णु क्षीर......में शेष शैया पर विश्राम करते है(३)
६. समस्त लोकों में वीणा लेकर विचरण करने वाले ब्रह्मा के मानस पुत्र. (३)
११. पाप कर्म अथवा अवनति की ओर गमन. (४)
१२. संसार. (२)
१३. ज्येष्ठ दशरथ नन्दन. (२)
१४. शिव की.....में देवता व भूत पिशाच सब सम्मिलित थे.(३)
१५. पवनपुत्र की बैठने की मुद्रा जो एक योगासन भी है. (४)
१६. हनुमान व भीम का प्रिय शस्त्र. (२)
१८. अंध कवि जिन्होंने कृष्ण-लीला का सजीव चित्रण किया. (४)
१६. झुक कर किया गया सादर प्रणाम. (३)

ऊपर से नीचे :

१. स्वयं पढ़ कर व गुन कर सीखना. (३)
२. एक राशि जिसका प्रतीक मछली है. (२)
३. इस संसार में प्राणी के आने व जाने का क्रम. (५)
४. भगवान को भोग लगाकर वितरित की जाने वाली सामग्री. (३)
५. श्री.....भुसुण्डि जो रामकथा श्रवण करके व सुनाकर धन्य हुए.
६. परमपिता अथवा समर्थ व्यक्ति की कृपा व आसरे पर पूर्णतया निर्भर. (५)
१०. कामदेव की पत्नी. (२)
११. विश्वभर में निर्मित स्वामी टेऊँराम को समर्पित स्थान. (५)
१२. वृद्धावस्था, जिसे देखकर राजकुमार सिद्धार्थ विरक्त हो गए.(२)
१३. एक पवित्र नदी जो पंजाब, हिमालय से चम्बा होती निकलती है.(२)
१४. किसी महान कार्य अथवा उद्देश्य हेतु प्राणों की आहुति देना. (४)
१७. सत्संग से सतूगुरु मिले, सतूगुरु से निज......... (२)

आध्यात्मिक वर्ग पहेली-26 व आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-23 के सही हल भेजने वालों के नाम

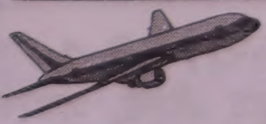
जयपुरसे प्रेमप्रकाशी राजकमल मोतियानी, शंकरलाल सतवानी,साक्षी मा ब्रीजा,मोना,यशिका बच्वानी,मुरलीधर,भावना,संदीप,मोनिका,कुणाल पारवानी,प्रदीप-गीता ज्ञानानी, ओमप्रकाश,हेमा,लवीना,ऋषि,सुन्दर-पूजा कृपलानी,लक्ष्मण,मोनिका,पीयुष,गुड़िया,भरत, चाहत जेठवानी, भारती-राजेश केसवानी,कविता-अशोक पुरसानी,जतिन,सारिका,सोनिया पुरसानी,आशा,लक्ष्मी रामवानी,आशा-जीवतराम टिलवानी, **विशाखापतनम्से** प्रेमप्रकाशी लीशा एम. पंजाबी, **लखनऊ से** प्रेमप्रकाशी रितू तेजवानी,हिना ज्ञानचन्दानी, **वाराणसीसे** प्रेम प्रकाशी लीना भगवानदास जाजानी, **नासिकसे** प्रेमप्रकाशी गुरुमुख,कविता,मनीष,रश्मी,दीपक,ऊषा,उमेश चन्दानी, सुभाष सक्सेना, **सूरतसे** प्रेमप्रकाशी गोपी एन. वासवानी, कौशल्या-जानीराम खानचन्दानी, **अजमेर से** प्रेमप्रकाशी सुलोचना भम्भानी,निर्मला-हीरानन्द,अंजना तुलस्यानी,चतुरी-मुरलीधर जेसवानी,विशनी जेसवानी, **कोटासे** प्रेम प्रकाशी मनोज,अनिल, मोहनलाल राजानी, **जोधपुरसे** प्रेमप्रकाशी रेनू ,ममता दयालदास खिमानी,भावना-दीपा बदलानी,चन्द्रा-भगवानदास, **ब्यावरसे** प्रेमप्रकाशी मनीष,रेखा,लक्ष्मी,मपना,वर्षा,हनी,संगीता,मीना,उत्तमदेवी वासवानी **नांगल मोजिया खैरथलसे** प्रेमप्रकाशी ईश्वरी गंगाराम राजवानी, **अहमदाबादसे** प्रेमप्रकाशी रश्मि मनोज कलवानी **बड़ौदासे** प्रेमप्रकाशी भूमिका-महेश वलेचा, **इन्दौरसे** प्रेमप्रकाशी मोनी नरेशलाल,भारती,कोमल गोदवाणी, **गान्धीधामसे** प्रेमप्रकाशी रमेश बूलचंदानी,जयन्ती-मोहनदास भगतानी,सुरेश चतुरानी,हिना-राजेश केसवानी, **अकलतरासे** प्रेमप्रकाशी दिनेश राणा,नरेश-गीता हरगुनानी, **चापासे** प्रेमप्रकाशी वरियलदास, **टूण्डलासे** प्रेमप्रकाशी ओमप्रकाश-प्रियंका वलेचा, **रायपुरसे** प्रेमप्रकाशी मीरा,सुशीला,रमेश,कविता,सुन्दरदास,गंगाराम, अमरलाल,नर्मदाप्रसाद बीना मिश्र,आशा,शान्ता,भागी,गीता,राणी, **धमतरीसे** प्रेमप्रकाशी लक्ष्मीदेवी,डिम्पल,विदिशा पंजवानी,राधा चावला,कौशल्या वाधवानी,वन्दना,पुष्पा,भावना रोहरा, **गोन्दियासे** प्रेमप्रकाशी ध्रुव,कल्पना,पूजा,राहुल लधानी, **दिल्लीसे** प्रेमप्रकाशी अखिल, **खण्डवासे** प्रेमप्रकाशी नीतू मोटवानी, **कामठीसे** प्रेमप्रकाशी रेखा-मोहनलाल लालवानी, **अमरावतीसे** प्रेम प्रकाशी सुनीता,जीतू, **तिरोड़ासे** प्रेमप्रकाशी कविता-भगवानदास दीपानी **फैजाबादसे** प्रेमप्रकाशी मोतीमल,डाली,बीना,नूतन,विमल,राहुल मदान,अन्नू,कीर्ति टिलवानी।

साईं टेऊँराम बाबा की लीलाऐं

चित्रकथा–24

चित्रांकन, लेखन- सुधा जौहरी, जयपुर






श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

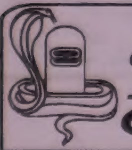
पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का




यात्रा कार्यक्रम

16 फरवरी प्रातः	2006		यवतमाल	07232-246077
16 से 19 फरवरी	2006	तक	नागपुर, कामठी	0712-2583458
20 फरवरी	2006		यात्रा	098290-14850, 094140-67850
21 से 23 फरवरी	2006	तक	जयपुर	0141-2372423, 2372424
24 से 27 फरवरी	2006	तक	ग्वालियर	0751-2426111
28 से 1 मार्च	2006	तक	डबरा	07524-223245
2 मार्च	2006		झांसी, दतिया	098290-14850, 094140-67850
3 से 5 मार्च	2006	तक	मुरैना	07532-230280
6 मार्च	2006	तक	काला महल, आगरा	0562-2369084
7 मार्च	2006	तक	कमला नगर, आगरा	0562-2882529, 2881736
8 से 9 मार्च	2006	तक	केदार नगर, आगरा	0562-2211499
10 से 11 मार्च	2006	तक	अलीगढ़	0571-2420591
12 से 22 मार्च	2006	तक	हरिद्वार	01334-260144, 260815
23 मार्च	2006		यात्रा	098290-14850, 094140-67850
24 से 26 मार्च	2006	तक	गांधीधाम	02836-229608
27 से 28 मार्च	2006	तक	राजकोट	098290-14850, 094140-67850
29 मार्च	2006		यात्रा	098290-14850, 094140-67९50
30 मार्च	2006		जयपुर	0141-2372424, 2372423

नोट : जयपुर प्रवास के समय मोबाईल बन्द रहेगे



तीज त्योहार



24 फरवरी 06 शुक्रवार – विजया एकादशी व्रत

26 फरवरी 06 रविवार – महाशिवरात्रि पर्व,संत गणेशानन्द जयन्ती

27 फरवरी 06 सोमवार – श्राद्ध की अमावस्या

28 फरवरी 06 मंगलवार – स्नानदानकी अमावस्या

1 मार्च 06 बुधवार – चन्द्रदर्शन

3 मार्च 06 शुक्रवार – वैनायकी चतुर्थी व्रत

5 मार्च 06 रविवार – सांई टेऊँराम चौथ

7 मार्च 06 मंगलवार – होलाष्टक प्रारंभ

10 मार्च 06 शुक्रवार – आमलकी एकादशी 14 मार्च 06 मंगलवार – होलिका दहन, पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत, मीन संक्रान्ति

15 मार्च 06 बुधवार – होली, धुलेण्डी, धूरियो, वसन्तोत्सव, होलाष्टक समाप्त

16 मार्च 06 गुरुवार – भाई दूज

18 मार्च 06 शनिवार – श्री गणेश चतुर्थी व्रत

20 मार्च 06 सोमवार – श्री रंग पंचमी

25 मार्च 06 शनिवार – पाप मोचनी एकादशी व्रत

29 मार्च 06 बुधवार – अमावस्या, सूर्यग्रहण स्पर्श सायं 4:47 मोक्ष सायं 5:56

30 मार्च 06 गुरुवार – गुड़ी पड़वा, चेटीचण्ड,चन्द्र दर्शन, झूलेलाल जयन्ती, चैत्र नवरात्रा प्रारम्भ

सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पावन अध्यक्षता में

पूज्य स्वामी गणेशानन्दजी महाराज का 105 वाँ जन्मोत्सव

23 फरवरी गुरुवार से — कार्यक्रम — 27 फरवरी सोमवार 2006 तक

गुरुवार 23 फरवरी 2006
प्रातः 5 बजे आश्रम से हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी निकलेगी तत्पश्चात् पाठ आरम्भ

शुक्रवार 24 फरवरी 2006
सायं 4 बजे सड़क मार्ग से अमरापुर वाहन द्वारा श्री गुरुवर का संतमण्डली सहित का आगमन

दिव्य-सत्संग-ज्ञान-यज्ञ
23 से 27 फरवरी 2006
प्रतिदिन प्रातः 8 से 10 बजे तक सत्संग
सायं 5 से 7:30 बजे तक

आयोजन स्थल : स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम
श्री महारूद्र मण्डल स्कूल के पीछे, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर (म.प्र.) दूरभाष- 0751-2426111

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम डबरा का 11वाँ वार्षिक महोत्सव

25 फरवरी से 1 मार्च तक

दिव्य-सत्संग-वर्षा
25 फरवरी से 1 मार्च 2006
प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 10:30 बजे तक
सायं 5 से 7:30 बजे तक

28 फरवरी 2006
प्रातः 9 बजे श्री गुरु महाराज जी का आगमन,
अग्रसेन चौराहे से शोभायात्रा

आयोजन स्थल : प्रेम प्रकाश आश्रम, ढीमरपुरा, डबरा (म.प्र.) दूरभाष- 07524-223245

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम मुरैना का ३रा वार्षिक महोत्सव

1 मार्च से 5 मार्च तक

दिव्य-सत्संग-वर्षा
1 मार्च से 5 मार्च 2006
प्रातः 7:30 से 9:30 बजे तक
सायं 5 से 7 बजे तक

3 मार्च 2006
प्रातः 9 बजे श्री गुरु महाराज जी
का आगमन, शोभायात्रा

आयोजन स्थल : प्रेम प्रकाश आश्रम, सिंधी कॉलोनी, मुरैना (म.प्र.) दूरभाष- 07532-230280

आदर्श नगर जयपुर में अमरलोक धाम का द्वितीय वार्षिकोत्सव

गुरुवार 23 फरवरी 2006 **कार्यक्रम :** प्रातः 7:30 से दोपहर 12:30 बजे तक

पाठों का भोग, हवन, सद्‌गुरु महाराजजी का आगमन, स्वागत शोभायात्रा, ध्वजावंदन, सत्संग
सद्‌गुरु टेऊँराम चौराहे का उद्‌घाटन, सद्‌गुरु सर्वानन्द चित्रावली का अनावरण, भण्डारा

डाक रजि. ग्वालियर संभाग – 161/2006–07 (R.M.S. Posting date 15th & 16th) भा.शा. – 29/18/81– II

भूलना सीखो

अमेरिका के एक प्रमुख डॉक्टर मेडिकल टॉक (Medical Talk) नामक पत्र में लिखते हैं कि वर्षों के अनुभव के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि दुःख दूर करने के लिये **भूल जाओ** से बढ़कर कोई दवा है ही नहीं। अपने लेख में वे लिखते हैं–यदि तुम शरीरसे, मनसे और आचरणसे स्वस्थ होना चाहते हो तो अस्वस्थताकी सारी बातें भूल जाओ।

रोज–रोज जिन्दगीमें छोटी–मोटी चिन्ताओंको लेकर झाँकते मत रहो, उन्हें भूल जाओ. उन्हें पोसो मत, अपने दिलके अन्दर उन्हें पाल मत रखो–उन्हें अन्दर से निकाल फेंको और भूल जाओ। उन्हें भुला दो। माना कि किसी अपने ने तुम्हें चोट पहुँचायी है, तुम्हारा दिल दुखाया है। सम्भव है जान बूझकर उसने ऐसा नहीं किया है और मान लो कि जान बूझकर ही उसने ऐसा कर डाला है तो क्या तुम उसे लेकर सूत कातते रहोगे? इससे तुम्हारे दिलका दर्द कुछ हल्का होगा क्या? अरे भाई! भुला दो, भूल जाओ; से लेकर चिन्ताओंका जाल मत बुनने लगो। भूल जाओ, उधर से चित्त हटा लो, आँखें फेर लो, मन मोड़ लो।

दूसरोंके प्रति तुम्हारे मनमें घृणा, द्वेष, ईर्ष्या, दुर्भाव आदिके जो घाव हैं उनमें भीतर ही भीतर मवाद भर रहा है और यह तुम्हारे ही शरीर–मन–प्राण में जहर फैला रहा है। क्यों न तुम इन तमाम बातोंको अपने दिलसे निकाल फेंको, मनसे बुहार फेंको, हृदय से बहा डालो और तुम देखोगे कि तुम्हारे भीतर ऐसी पवित्रता, ऐसी सफाई आवेगी कि तुम्हारा शरीर और मन पूर्णतः स्वस्थ तथा निर्मल हो जायगा... तुम उन्हें पोसकर अपने ही हाथों अपनी हत्या कर रहे हो– क्या तुम यह नहीं जानते? इसीलिये तो कहता हूँ– भूल जाओ, भुला दो।

और बड़े–बड़े संकट, विपत्ति, दुःख के समय क्या करें? यदि हमारे ऊपर दुःखोंका पहाड़ टूट पड़ा हो, विपत्ति की बिजली गिर पड़ी हो, किसीने हमारे सत्यानाश की तदबीरें सोच ली हों और कोई हमारा परम प्रिय व्यक्ति हमें तड़पता हुआ छोड़कर मृत्युके मुखमें समा गया हो– ऐसे अवसरोंपर जब हमारा घाव गहरा और मर्मान्तक है, हम क्या करें? क्या उन्हें भी भूल जायँ, भुला डालें? हाँ, हाँ उन्हें भी भूल जाओ–धीरे धीरे ही सही, लेकिन भूल जाओ उन्हें भी। इसीमें तुम्हारी भलाई है। भविष्य में इससे तुम अधिकाधिक सुख पाओगे, शान्ति पाओगे।

दुःखकी, चिन्ताकी, बीमारीकी बातें न करो, न सुनो. स्वास्थ्यकी, आनन्दकी, प्रेमकी, शान्तिकी ही बातें करो और इन्हें ही सुनो। देखोगे कि तुम स्वास्थ्य लाभ करोगे, आनन्द लाभ करोगे, प्रेम पाओगे, शान्ति पाओगे।

और मैं अपने अनुभव से कह रहा हूँ, सच मानो कि दुःखोंका भार उतार डालना कतई मुश्किल नहीं है, बड़ा ही आसान है। शुरू–शुरू में आदत डालनेमें कुछ समय लगेगा, कुछ कठिनाई भी होगी; लेकिन आदत पड़ जाने पर बात की बात में तुम बड़ी से बड़ी चिन्ता को चुटकियों में उड़ा दोगे और इस प्रकार भूल जाने या भुला देनेमें तुम इतने अभ्यस्त हो जाओगे कि जीवन को दुःखमय और विषाक्त कर देनेवाली तमाम बातें तुम्हारे सामने आते ही काफूर हो जायँगी। यह संसार तुम्हारे लिये आनन्दमयका आनन्द विलास प्रतीत होगा; क्योंकि इसमें दुःख, अभाव, पीड़ा, कष्ट आदि जैसी कोई वस्तु रह ही नहीं जायगी।

भूलना सीखो। यदि शरीरका स्वास्थ्य और मनकी शान्ति अभीष्ट है तो भूलना सीखो, भूलना सीखो।

–प्रेमी

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है,शुल्क अवधि समाप्त होने की सूचना भी आपके पते के ऊपर LAST COPY लिखकर उसे Highlight करके दर्शायी गई है. पत्रिका की निरंतर प्राप्ति के लिये अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को यथाशीघ्र करा लेना चाहिए. – *व्यवस्थापक*

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान्

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलके लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश कार्यालयसे सजाकर रवि ऑफसेट,निम्बालकर की गोठ नं.2, से मुद्रित करवाकर कार्यालयः स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम,गाढ़वे की गोठ, लश्कर,ग्वालियर से प्रकाशित किया गया. फैक्स नम्बर–0751–4045144 (कार्यालय फोन सांय 4 से 8–4045144)
सम्पादक : शंकरलाल सबनानी, फोन : 0751–2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 0751–2454183